اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا

जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की त़ाक़त भर उस का फ़ाएदा है जो अच्छा कमाया और उस का नुक़्सान है जो बुराई कमाई[624] ऐ रब हमारे

تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا

हमें न पकड़ अगर हम भूलें[625] या चूकें ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा

حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا

तूने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (त़ाक़त)

بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۥ وَاغْفِرْ لَنَا ۥ وَارْحَمْنَا ۥ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا

न हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर मेहर (रह़्म) कर तू हमारा मौला है तो

عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾ ع

काफ़िरों पर हमें मदद दे

اٰياتها ٢٠٠ | ٣ سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ مَدَنِيَّةٌ ٨٩ | ركوعاتها ٢٠

सूरए आले इमरान मदनिय्या है[1], इस में दो सो आयतें और बीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

الٓمّٓ ﴿١﴾ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ﴿٢﴾ ؕ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ

अल्लाह है जिस के सिवा किसी की पूजा नहीं[2] आप ज़िन्दा औरों का क़ाइम रखने वाला उस ने तुम पर येह सच्ची किताब

بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٣﴾ ۙ مِنْ

उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती और उस ने इस से पहले तौरैत और इन्जील

624 : या'नी हर जान को अ़मले नेक का अज्रो सवाब और अ़मले बद का अ़ज़ाब व इ़क़ाब होगा। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों को त़रीक़े दुआ़ की तल्क़ीन फ़रमाई कि वोह इस त़रह़ अपने परवर दगार से अ़र्ज़ करें। 625 : और सह्व से तेरे किसी हुक्म की ता'मील में क़ासिर रहें। 1 : सूरए आले इमरान मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुई, इस में दो सो आयतें, तीन हज़ार चार सो अस्सी कलिमे, चौदह हज़ार पांच सो बीस हुरूफ़ हैं। 2 **शाने नुज़ूल :** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत वफ़्दे नजरान के ह़क़ में नाज़िल हुई जो साठ सुवारों पर मुश्तमिल था, उस में चौदह सरदार थे और तीन उस क़ौम के बड़े अकाबिर व मुक़्तदा, **एक आ़क़िब** जिस का नाम अ़ब्दुल मसीह़ था, येह शख़्स अमीरे क़ौम था और बिग़ैर इस की राय के नसारा कोई काम नहीं करते थे। **दूसरा सय्यिद** जिस का नाम ऐहम था, येह शख़्स अपनी क़ौम का मो'तमदे आ'ज़म और मालियात का अफ़्सरे आ'ला था। ख़ुर्दो नोश और रसदों (ज़ख़ीरा अन्दोज़ी) के तमाम इन्तिज़ामात इसी के हुक्म से होते थे। **तीसरा अबू ह़ारिसा** इब्ने अ़ल्क़मा था, येह शख़्स नसारा के तमाम उ़लमा और पादरियों का पेश्वाए आ'ज़म था। सलात़ीने रूम इस के इ़ल्म और इस की दीनी अ़ज़मत के लिह़ाज़ से इस का इक्राम व अदब करते थे। येह तमाम लोग उ़म्दा और क़ीमती पोशाकें पहन कर बड़ी शानो शकोह से हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुनाज़रा करने के क़स्द से आए और मस्जिदे अक़्दस में दाख़िल हुए, हुज़ूरे

www.dawateislami.net

قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

उतारी लोगों को राह दिखाती और फ़ैसला उतारा बेशक वोह जो **अल्लाह** की आयतों से मुन्किर हुए[3]

لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝٤ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى

उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है और **अल्लाह** ग़ालिब बदला लेने वाला है **अल्लाह** पर कुछ छुपा

عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝٥ ؕ هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي

नहीं ज़मीन में न आस्मान में वोही है कि तुम्हारी तस्वीर बनाता है

الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٦ هُوَ الَّذِيْٓ

माओं के पेट में जैसी चाहे[4] उस के सिवा किसी की इबादत नहीं इ़ज़्ज़त वाला हिक्मत वाला[5] वोही है जिस ने

اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ

तुम पर येह किताब उतारी इस की कुछ आयतें साफ़ मा'ना रखती हैं[6] वोह किताब की अस्ल हैं[7] और दूसरी वोह हैं जिन के

अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات उस वक़्त नमाज़े अ़स्र अदा फ़रमा रहे थे, इन लोगों की नमाज़ का वक़्त भी आ गया और इन्हों ने भी मस्जिद शरीफ़ ही में जानिबे शर्क़ मुतवज्जेह हो कर नमाज़ शुरूअ़ कर दी। फ़राग़ के बा'द हुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات से गुफ़्तगू शुरूअ़ की। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने फ़रमाया : तुम इस्लाम लाओ ! कहने लगे : हम आप से पहले इस्लाम ला चुके। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने फ़रमाया : येह ग़लत़ है, येह दा'वा झूटा है, तुम्हें इस्लाम से तुम्हारा येह दा'वा रोकता है कि **अल्लाह** की औलाद है, और तुम्हारी सलीब परस्ती रोकती है और तुम्हारा ख़िन्ज़ीर खाना रोकता है। उन्हों ने कहा कि अगर ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुदा के बेटे न हों तो बताइये उन का बाप कौन है ? और सब के सब बोलने लगे। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि बेटा बाप से ज़रूर मुशाबेह होता है ! उन्हों ने इक़रार किया। फिर फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब ह़य्युन ला यमूत है, उस के लिये मौत मुह़ाल है और ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات पर मौत आने वाली है ! उन्हों ने इस का भी इक़रार किया। फिर फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब बन्दों का कारसाज़ और उन का ह़ाफ़िज़े ह़क़ीक़ी और रोज़ी देने वाला है ! उन्हों ने कहा : हां। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या ह़ज़रते ईसा भी ऐसे ही हैं ? कहने लगे : नहीं। फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि **अल्लाह** तआ़ला पर आस्मान व ज़मीन की कोई चीज़ पोशीदा नहीं ! उन्हों ने इक़रार किया। हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि ह़ज़रते ईसा बिग़ैर ता'लीमे इलाही इस में से कुछ जानते हैं ? उन्हों ने कहा : नहीं। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि ह़ज़रते ईसा ह़म्ल में रहे, पैदा होने वालों की त़रह़ पैदा हुए, बच्चों की त़रह़ ग़िज़ा दिये गए, खाते, पीते थे, अ़वारिज़े बशरी रखते थे, उन्हों ने इस का इक़रार किया। हुज़ूर ने फ़रमाया : फिर वोह कैसे इलाह हो सकते हैं ! जैसा कि तुम्हारा गुमान है। इस पर वोह सब साकित रह गए और उन से कोई जवाब बन न आया। इस पर सूरए आले इ़मरान की अव्वल से कुछ ऊपर अस्सी आयतें नाज़िल हुईं। **फ़ाएदा :** सिफ़ाते इलाहिय्यह में "ह़य्युन" ब मा'ना दाइम बाक़ी के है या'नी ऐसा हमेशगी रखने वाला जिस की मौत मुम्किन न हो। क़य्यूम वोह है जो क़ाइम बिज़्ज़ात हो और ख़ल्क़ अपनी दुन्यवी और उख़्रवी ज़िन्दगी में जो ह़ाजतें रखती है उस की तदबीर फ़रमाए। 3 : इस में वफ़्दे नजरान के नसरानी भी दाख़िल हैं 4 : मर्द, औ़रत, गोरा, काला, ख़ूब सूरत, बद शक्ल वग़ैरा। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारा माद्दए पैदाइश मां के पेट में चालीस रोज़ जम्अ़ होता है, फिर इतने ही दिन अ़लक़ह या'नी ख़ून बस्ता (जमे हुए ख़ून) की शक्ल में होता है, फिर इतने ही दिन पारए गोश्त की सूरत में रहता है, फिर **अल्लाह** तआ़ला एक फ़िरिश्ता भेजता है जो उस का रिज़्क़, उस की उ़म्र, उस के अ़मल, उस का अन्जामे कार या'नी उस की सआ़दत व शक़ावत लिखता है, फिर उस में रूह़ डालता है। तो उस की क़सम ! जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं आदमी जन्नतियों के से अ़मल करता रहता है, यहां तक कि उस में और जन्नत में हाथ भर का या'नी बहुत ही कम फ़र्क़ रह जाता है तो किताब सब्क़त करती है और वोह दोज़ख़ियों के से अ़मल करता है, उसी पर उस का ख़ातिमा हो जाता है और दाख़िले जहन्नम होता है, और कोई ऐसा होता है कि दोज़ख़ियों के से अ़मल करता रहता है यहां तक कि उस में और दोज़ख़ में एक हाथ का फ़र्क़ रह जाता है फिर किताब सब्क़त करती है और उस की ज़िन्दगी का नक़्शा बदलता है और वोह जन्नतियों के से अ़मल करने लगता है, इसी पर उस का ख़ातिमा होता है और दाख़िले जन्नत हो जाता है। 5 : इस में भी नसारा का रद है जो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات को ख़ुदा का बेटा कहते और उन की इबादत करते थे। 6 : जिस में कोई एह़तिमाल व इश्तिबाह नहीं। 7 : कि अह़काम में

www.dawateislami.net

مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ فَیَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ

मा'ना में इश्तिबाह है[8] वोह जिन के दिलों में कजी है[9] वोह इश्तिबाह वाली के पीछे पड़ते

مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِیْلِهٖ ۚ وَمَا یَعْلَمُ تَاْوِیْلَهٗۤ اِلَّا

हैं[10] गुमराही चाहने[11] और उस का पहलू ढूंढने को[12] और उस का ठीक पहलू अल्लाह ही को मा'लूम

اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ

है[13] और पुख़्ता इल्म वाले[14] कहते हैं हम उस पर ईमान लाए[15] सब हमारे रब के पास से है[16]

وَمَا یَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝۷ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ

और नसीहत नहीं मानते मगर अ़क़्ल वाले[17] ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बा'द इस के कि तूने

هَدَیْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝۸ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ

हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रह़मत अ़ता कर बेशक तू है बड़ा देने वाला ऐ रब हमारे बेशक तू

جَامِعُ النَّاسِ لِیَوْمٍ لَّا رَیْبَ فِیْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ۝۹ ع

सब लोगों को जम्अ़ करने वाला है[18] उस दिन के लिये जिस में कोई शुब्हा नहीं[19] बेशक अल्लाह का वा'दा नहीं बदलता[20]

اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِیَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ

बेशक वोह जो काफ़िर हुए[21] उन के माल और उन की औलाद अल्लाह से उन्हें कुछ

اللّٰهِ شَیْـًٔا ؕ وَاُولٰٓىِٕكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝۱۰ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ

न बचा सकेंगे और वोही दोज़ख़ के ईंधन हैं जैसे फ़िरऔ़न वालों

उन की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाता है, और ह़लाल व ह़राम में उन्हीं पर अ़मल। **8 :** वोह चन्द वुजूह का एह़तिमाल रखती हैं। उन में से कौन सी वज्ह मुराद है येह अल्लाह ही जानता है, या जिस को अल्लाह तआ़ला इस का इ़ल्म दे। **9 :** या'नी गुमराह और बद मज़्हब लोग जो हवाए नफ़्सानी के पाबन्द हैं। **10 :** और उस के ज़ाहिर पर ह़ुक्म करते हैं या तावीले बातिल करते हैं और येह नेक निय्यती से नहीं बल्कि (جمل) **11 :** और शको शुबा में डालने (جمل) **12 :** अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ बा वुजूदे कि वोह तावील के अह़ल नहीं। (جمل وخازن) **13 :** ह़क़ीक़त में (جمل) और अपने करम व अ़त़ा से जिस को वोह नवाज़े। **14 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : आप फ़रमाते थे कि मैं "रासिख़ीन फ़िल इ़ल्म" से हूं, और मुजाहिद से मरवी है कि मैं उन में से हूं जो मुतशाबह की तावील जानते हैं। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि "रासिख़ फ़िल इ़ल्म" वोह आ़लिमे बा अ़मल है जो अपने इ़ल्म का मुत्तबेअ़ हो, और एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह है कि "रासिख़ फ़िल इ़ल्म" वोह हैं जिन में चार सिफ़तें हों : तक़्वा अल्लाह का, तवाज़ोअ़ लोगों से, ज़ोहद दुन्या से, मुजाहदा नफ़्स के साथ। (خازن) **15 :** कि वोह अल्लाह की त़रफ़ से है और जो मा'ना उस की मुराद हैं ह़क़ हैं और उस का नाज़िल फ़रमाना ह़िक्मत है। **16 :** मोह़कम हो या मुतशाबह। **17 :** और रासिख़ इ़ल्म वाले कहते हैं **18 :** ह़िसाब या जज़ा के वास्ते। **19 :** वोह रोज़े क़ियामत है। **20 :** तो जिस के दिल में कजी हो वोह हलाक होगा और जो तेरे मिन्नतो एह़सान से हिदायत पाए वोह सईद होगा, नजात पाएगा। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि किज़्ब "मुनाफ़िये उलूहिय्यत" है, लिहाज़ा ह़ज़रते क़ुद्दूस क़दीर का किज़्ब मुह़ाल और उस की त़रफ़ इस की निस्बत सख़्त बे अदबी। (مدارک وابوسعود وغیرہ) **21 :** रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से मुन्ह़रिफ़ हो कर।

www.dawateislami.net

وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ

और उन से अगलों का त़रीक़ा उन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं तो अल्लाह ने उन के गुनाहों पर उन को पकड़ा

وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۱﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ

और अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त फ़रमा दो काफ़िरों से कोई दम जाता है कि तुम मग़लूब होगे

وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۲﴾ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ

और दोज़ख़ की त़रफ़ हांके जाओगे[22] और वोह बहुत ही बुरा बिछोना बेशक तुम्हारे लिये निशानी थी[23]

فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ

दो गुरौहों में जो आपस में भिड़ पड़े[24] एक जथ्था (गुरौह) अल्लाह की राह में लड़ता[25] और दूसरा काफ़िर[26]

يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْىَ الْعَيْنِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

कि उन्हें आंखों देखा अपने से दूना समझें और अल्लाह अपनी मदद से ज़ोर देता है जिसे चाहता है[27]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿۱۳﴾ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ

बेशक इस में अ़क़्ल मन्दों के लिये ज़रूर देख कर सीखना है लोगों के लिये आरास्ता की गई उन ख़्वाहिशों की महब्बत[28]

مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ

औरतें और बेटे और तले ऊपर सोने चांदी के ढेर

وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ

और निशान किये हुए घोड़े और चौपाए और खेती येह जीती दुन्या की पूंजी

22 शाने नुज़ूल : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि जब बद्र में कुफ़्फ़ार को रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم शिकस्त दे कर मदीनए त़य्यिबा वापस हुए तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने यहूद को जम्अ़ कर के फ़रमाया कि तुम अल्लाह से डरो और इस से पहले इस्लाम लाओ कि तुम पर ऐसी मुसीबत नाज़िल हो जैसी बद्र में क़ुरैश पर हुई, तुम जान चुके हो मैं नबिय्ये मुरसल हूं, तुम अपनी किताब में येह लिखा पाते हो। इस पर उन्हों ने कहा कि क़ुरैश तो फ़ुनूने ह़र्ब (जंगी हुनर व महारत) से ना आशना हैं, अगर हम से मुक़ाबला हुवा तो आप को मा'लूम हो जाएगा कि लड़ने वाले ऐसे होते हैं। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें ख़बर दी गई कि वोह मग़लूब होंगे और क़त्ल किये जाएंगे, गिरिफ़्तार किये जाएंगे, उन पर जिज़्या मुक़र्रर होगा चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने एक रोज़ में छ[6] सो की ता'दाद को क़त्ल फ़रमाया और बहुतों को गिरिफ़्तार किया और अहले ख़ैबर पर जिज़्या मुक़र्रर फ़रमाया। **23 :** इस के मुख़ात़ब यहूद हैं और बा'ज़ के नज़्दीक तमाम कुफ़्फ़ार और बा'ज़ के नज़्दीक मोमिनीन (جمل) **24 :** जंगे बद्र में। **25 :** या'नी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब इन की कुल ता'दाद तीन सो तेरह थी, सतत्तर मुहाजिर और दो सो छत्तीस अन्सार, मुहाजिरीन के साह़िबे रायत (जिन के हाथ में परचम था वोह) ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा थे और अन्सार के ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا। इस कुल लश्कर में दो घोड़े सत्तर ऊंट और छ[6] ज़िरह, आठ तलवारें थीं और इस वाक़िए़ में चौदह सह़ाबा शहीद हुए छ[6] मुहाजिर और आठ अन्सार। **26 :** कुफ़्फ़ार की ता'दाद नव सो पचास थी उन का सरदार उ़त्बा बिन रबीआ़ था और उन के पास सो घोड़े थे और सात सो ऊंट और ब कसरत ज़िरह और हथियार थे। (جمل) **27 :** ख़्वाह उस की ता'दाद क़लील ही हो और सरो सामान की कितनी ही कमी हो। **28 :** ताकि शह्वत परस्तों और ख़ुदा परस्तों के

www.dawateislami.net

الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ

है[29] और अल्लाह है जिस के पास अच्छा ठिकाना[30] तुम फ़रमाओ क्या मैं तुम्हें इस से[31] बेहतर चीज़

ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

बता दूं परहेज़ गारों के लिये उन के रब के पास जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें रवां

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ

हमेशा उन में रहेंगे और सुथरी बीबियां[32] और अल्लाह की ख़ुशनूदी[33] और अल्लाह बन्दों को

بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اِنَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا

देखता है[34] वोह जो कहते हैं ऐ रब हमारे हम ईमान लाए तो हमारे गुनाह मुआफ़ कर

وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾ الصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ

और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले सब्र वाले[35] और सच्चे[36] और अदब वाले और राहे ख़ुदा में ख़र्चने वाले

وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ

और पिछले पहरे मुआफ़ी मांगने वाले[37] अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं[38]

وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ

और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने[39] इन्साफ़ से क़ाइम हो कर उस के सिवा किसी की इबादत नहीं इ़ज़्ज़त वाला

दरमियान फ़र्क़ व इम्तियाज़ ज़ाहिर हो, जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया : ''اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا'' । 29 : इस से कुछ अ़र्से नफ़्अ़ पहुंचता है फिर फ़ना हो जाती है। इन्सान को चाहिये कि मताए दुन्या को ऐसे काम में ख़र्च करे जिस में उस की आ़क़िबत की दुरुस्ती और सआ़दते आख़िरत हो। 30 : जन्नत। तो चाहिये कि इस की रग़बत की जाए और दुन्याए ना पाएदार की फ़ानी मरग़ूबात से दिल न लगाया जाए। 31 : मताए दुन्या से। 32 : जो ज़नाना अ़वारिज़ और हर ना पसन्द व क़ाबिले नफ़रत चीज़ से पाक। 33 : और येह सब से आ'ला ने'मत है। 34 : और उन के आ'माल व अह़वाल जानता और उन की जज़ा देता है। 35 : जो त़ाअ़तों और मुसीबतों पर सब्र करें और गुनाहों से बाज़ रहें। 36 : जिन के क़ौल और इरादे और निय्यतें सब सच्ची हों। 37 : इस में आख़िर शब में नमाज़ पढ़ने वाले भी दाख़िल हैं और वक़्ते सह़र के दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करने वाले भी, येह वक़्त ख़ल्वत व इजाबते दुआ़ का है। ह़ज़रते लुक़्मान عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया कि मुर्ग़ से कम न रहना कि वोह तो सह़र से निदा करे और तुम सोते रहो। 38 **शाने नुज़ूल :** अह़बारे शाम में से दो शख़्स सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। जब उन्हों ने मदीनए त़य्यिबा देखा तो एक दूसरे से कहने लगा कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मा के शह़र की येही सिफ़त है जो इस शह़र में पाई जाती है। जब आस्तानए अक़्दस पर ह़ाज़िर हुए तो उन्हों ने हुज़ूर के शक्लो शमाइल तौरैत के मुत़ाबिक़ देख कर हुज़ूर को पहचान लिया और अ़र्ज़ किया : आप मुह़म्मद हैं ? हुज़ूर ने फ़रमाया : हां। फिर अ़र्ज़ किया कि आप अह़मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हैं ? फ़रमाया : हां। अ़र्ज़ किया : हम एक सुवाल करते हैं अगर आप ने ठीक जवाब दे दिया तो हम आप पर ईमान ले आएंगे। फ़रमाया : सुवाल करो ! उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि किताबुल्लाह में सब से बड़ी शहादत कौन सी है ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस को सुन कर वोह दोनों ह़ब्र (यहूदी आ़लिम) मुसल्मान हो गए। ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि का'बए मुअ़ज़्ज़मा में तीन सो साठ बुत थे, जब मदीनए त़य्यिबा में येह आयत नाज़िल हुई तो का'बे के अन्दर वोह सब सज्दे में गिर गए। 39 : या'नी अम्बिया व औलिया ने।

www.dawateislami.net

النصف

الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ

हिक्मत वाला बेशक अल्लाह के यहां इस्लाम ही दीन है[40] और फूट में न पड़े

اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ

किताबी[41] मगर बा'द इस के कि उन्हें इल्म आ चुका[42] अपने दिलों की जलन से[43] और जो अल्लाह की

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾ فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ

आयतों का मुन्किर हो तो बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है फिर ऐ महबूब अगर वोह तुम से हुज्जत करें तो फ़रमा दो मैं अपना मुंह अल्लाह

وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ

के हुज़ूर झुकाए हूं और जो मेरे पैरव हुए[44] और किताबियों और अनपढ़ों से फ़रमाओ[45]

ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ

क्या तुम ने गरदन रखी[46] पस अगर वोह गरदन रखें जब तो राह पा गए और अगर मुंह फेरें तो तुम पर तो येही हुक्म पहुंचा

الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ع ١٢

देना है[47] और अल्लाह बन्दों को देख रहा है वोह जो अल्लाह की आयतों से मुन्किर होते

وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ

और पैग़म्बरों को नाहक़ शहीद करते[48] और इन्साफ़ का हुक्म करने वालों को

بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

क़त्ल करते हैं उन्हें ख़ुश ख़बरी दो दर्दनाक अ़ज़ाब की येह हैं वोह जिन के

40 : इस के सिवा कोई और दीन मक़्बूल नहीं। यहूदो नसारा वग़ैरा कुफ़्फ़ार जो अपने दीन को अफ़्ज़ल व मक़्बूल कहते हैं इस आयत में उन के दा'वे को बातिल कर दिया। 41 : येह आयत यहूदो नसारा के हक़ में वारिद हुई, जिन्हों ने इस्लाम को छोड़ा और उन्हों ने सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ किया। 42 : वोह अपनी किताबों में सय्यिदे आलम ﷺ की ना'त व सिफ़त देख चुके और उन्हों ने पहचान लिया कि येही वोह नबी हैं जिन की कुतुबे इलाहिय्यह में ख़बरें दी गई हैं। 43 : या'नी उन के इख़्तिलाफ़ का सबब उन का हसद और मनाफ़ेए दुन्यविया की तमअ़ है। 44 : या'नी मैं और मेरे मुत्तबिईन हमातन (यक्सूई से पूरे तौर पर) अल्लाह तआ़ला के फ़रमां बरदार और मुतीअ़ हैं, "हमारा दीन" दीने तौहीद है, जिस की सिह्हत तुम्हें ख़ुद अपनी किताबों से भी साबित हो चुकी है तो इस में तुम्हारा हम से झगड़ा करना बिल्कुल बातिल है। 45 : जितने काफ़िर ग़ैर किताबी हैं वोह उम्मिय्यीन में दाख़िल हैं, इन्हीं में से अ़रब के मुश्रिकीन भी हैं। 46 : और दीने इस्लाम के हुज़ूर सरे नियाज़ ख़म किया या बा वुजूद बराहीने बय्यिना क़ाइम होने के तुम अभी तक अपने कुफ़्र पर हो। येह दा'वते इस्लाम का एक पैराया है, और इस तरह उन्हें दीने हक़ की तरफ़ बुलाया जाता है। 47 : वोह तुम ने पूरा कर ही दिया इस से उन्हों ने नफ़्अ़ न उठाया तो नुक़्सान में वोह रहे। इस में हुज़ूर सय्यिदे आलम ﷺ की तस्कीने ख़ातिर है कि आप उन के ईमान न लाने से रन्जीदा न हों। 48 : जैसा कि बनी इसराईल ने सुब्ह को एक साअ़त के अन्दर तेंतालीस नबियों को क़त्ल किया, फिर जब उन में से एक सो बारह आ़बिदों ने उठ कर उन्हें नेकियों का हुक्म दिया और बदियों से मन्अ़ किया तो उसी रोज़ शाम को उन्हें भी क़त्ल कर दिया। इस आयत में सय्यिदे आलम ﷺ के ज़माने के यहूद को तौबीख़ है क्यूं कि वोह अपने आबाओ अज्दाद के ऐसे बद तरीन फ़े'ल से राज़ी हैं।

www.dawateislami.net

حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ اَلَمْ

अ़मल अकारत गए दुन्या व आख़िरत में[49] और उन का कोई मददगार नहीं[50] क्या तुम ने

تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ

उन्हें न देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला[51] किताबुल्लाह की त़रफ़ बुलाए जाते हैं

لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾ ذٰلِكَ

कि वोह उन का फ़ैसला करे फिर उन में का एक गुरोह इस से रूगर्दां हो कर फिर जाता है[52] येह जुर्अत[53]

بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۖ وَّغَرَّهُمْ فِيْ

उन्हें इस लिये हुई कि वोह कहते हैं हरगिज़ हमें आग न छूएगी मगर गिनती के दिनों[54] और उन के

دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ

दीन में उन्हें फ़रेब दिया उस झूट ने जो बांधते थे[55] तो कैसी होगी जब हम उन्हें इकठ्ठा करेंगे उस दिन के लिये जिस में शक

فِيْهِ ۚ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ

नहीं[56] और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर जुल्म न होगा यूं अ़र्ज़ कर

49 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि अम्बिया की जनाब में बे अदबी कुफ़्र है और येह भी कि कुफ़्र से तमाम आ'माल अकारत हो जाते हैं। **50 :** कि उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचाए। **51 :** या'नी यहूद को कि उन्हें तौरैत शरीफ़ के उ़लूम व अह़काम सिखाए गए थे जिन में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के औसाफ़ व अह़वाल और दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का बयान है। इस से लाज़िम आता था कि जब हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हों और उन्हें क़ुरआने करीम की त़रफ़ दा'वत दें तो वोह हुज़ूर पर और क़ुरआन शरीफ़ पर ईमान लाएं और इस के अह़काम की ता'मील करें लेकिन उन में से बहुतों ने ऐसा नहीं किया। इस तक़्दीर पर आयत में "مِنَ الْكِتَابِ" से तौरैत और "كِتَابُ اللّٰه" से क़ुरआन शरीफ़ मुराद है। **52 शाने नुज़ूल :** इस आयत के शाने नुज़ूल में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से एक रिवायत येह आई है कि एक मरतबा सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم बैतुल मदरास में तशरीफ़ ले गए और वहां यहूद को इस्लाम की दा'वत दी। नुऐ़म इब्ने अ़म्र और ह़ारिस इब्ने ज़ैद ने कहा कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) आप किस दीन पर हैं ? फ़रमाया : मिल्लते इब्राहीमी पर। वोह कहने लगे : ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام तो यहूदी थे। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तौरैत लाओ ! अभी हमारे तुम्हारे दरमियान फ़ैसला हो जाएगा। इस पर न जमे और मुन्किर हो गए, इस पर येह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। इस तक़्दीर पर आयत में "كِتَابُ اللّٰه" से तौरैत मुराद है। इन्हीं ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से एक रिवायत येह भी मरवी है कि यहूदे ख़ैबर में से एक मर्द ने एक औ़रत के साथ ज़िना किया था और तौरैत में ऐसे गुनाह की सज़ा पथ्थर मार मार कर हलाक कर देना है लेकिन चूंकि येह लोग यहूदियों में ऊंचे ख़ानदान के थे इस लिये उन्हों ने उन का संगसार करना गवारा न किया और इस मुआ़मले को ब ई उम्मीद सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास लाए कि शायद आप संगसार करने का हुक्म न दें मगर हुज़ूर ने उन दोनों के संगसार करने का हुक्म दिया, इस पर यहूद तैश में आए और कहने लगे कि इस गुनाह की येह सज़ा नहीं आप ने जुल्म किया। हुज़ूर ने फ़रमाया कि फ़ैसला तौरैत पर रखो। कहने लगे : येह इन्साफ़ की बात है। तौरैत मंगाई गई और अ़ब्दुल्लाह बिन सौर या यहूद के बड़े आ़लिम ने उस को पढ़ा, उस में आयते रज्म आई, जिस में संगसार करने का हुक्म था, अ़ब्दुल्लाह ने उस पर हाथ रख लिया और उस को छोड़ गया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने उस का हाथ हटा कर आयत पढ़ दी यहूदी ज़लील हुए और वोह यहूदी मर्द व औ़रत जिन्हों ने ज़िना किया था हुज़ूर के हुक्म से संगसार किये गए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **53 :** किताबे इलाही से रू गर्दानी करने की। **54 :** या'नी चालीस दिन या एक हफ़्ता फिर कुछ ग़म नहीं। **55 :** और उन का येह क़ौल था कि हम **अल्लाह** के बेटे और उस के प्यारे हैं, वोह हमें गुनाहों पर अ़ज़ाब न करेगा मगर बहुत थोड़ी मुद्दत **56 :** और वोह रोज़े क़ियामत है।

www.dawateislami.net

اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ

ऐ अल्लाह मुल्क के मालिक तू जिसे चाहे सल्तनत दे और जिस से चाहे सल्तनत

تَشَآءُ ۫ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ

छीन ले और जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे सारी भलाई तेरे ही हाथ है बेशक तू

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦﴾ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي

सब कुछ कर सकता है[57] तू रात का हिस्सा दिन में डाले और दिन का हिस्सा रात में

الَّيْلِ ۫ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۫

डाले[58] और मुर्दा से ज़िन्दा निकाले और ज़िन्दा से मुर्दा निकाले[59]

وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ

और जिसे चाहे बे गिनती दे मुसल्मान काफ़िरों को अपना दोस्त

اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ

न बना लें मुसल्मानों के सिवा[60] और जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह से कुछ अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़)

فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَاِلَى

न रहा मगर येह कि तुम उन से कुछ डरो[61] और अल्लाह तुम्हें अपने ग़ज़ब से डराता है और अल्लाह

اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨﴾ قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ

ही की तरफ़ फिरना है तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने जी की बात छुपाओ या ज़ाहिर करो अल्लाह को सब

57 शाने नुज़ूल : फ़त्हे मक्का के वक़्त सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को मुल्के फ़ार्स व रूम की सल्तनत का वा'दा दिया तो यहूद व मुनाफ़िक़ीन ने इस को बहुत बईद समझा और कहने लगे : कहां मुहम्मदे मुस्तफ़ा (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) और कहां फ़ार्स व रूम के मुल्क ! वोह बड़े ज़बर दस्त और निहायत महफ़ूज़ हैं। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और आख़िर कार हुज़ूर का वोह वा'दा पूरा हो कर रहा। **58 :** या'नी कभी रात को बढ़ाए दिन को घटाए और कभी दिन को बढ़ा कर रात को घटाए येह तेरी क़ुदरत है, तो फ़ार्स व रूम से मुल्क ले कर ग़ुलामाने मुस्तफ़ा (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) को अ़ता करना उस की क़ुदरत से क्या बईद है ! **59 :** "मुर्दा से ज़िन्दा का निकालना" इस तरह़ है जैसे कि ज़िन्दा इन्सान को नुत्फ़ए बेजान से, और परिन्द के ज़िन्दा बच्चे को बे रूह़ अन्डे से, और ज़िन्दा दिल मोमिन को मुर्दा दिल काफ़िर से, और "ज़िन्दा से मुर्दा निकालना" इस तरह़ जैसे कि ज़िन्दा इन्सान से नुत्फ़ए बेजान, और ज़िन्दा परिन्द से बेजान अन्डा, और ज़िन्दा दिल ईमानदार से मुर्दा दिल काफ़िर। **60 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने जंगे अह़ज़ाब के दिन सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मेरे साथ पांच सो यहूदी हैं जो मेरे ह़लीफ़ हैं, मेरी राय है कि मैं दुश्मन के मुक़ाबिल उन से मदद ह़ासिल करूं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और काफ़िरों को दोस्त और मददगार बनाने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। **61 :** कुफ़्फ़ार से दोस्ती व महब्बत मम्नूअ़ व ह़राम है, इन्हें राज़दार बनाना, इन से मुवालात करना ना जाइज़ है, अगर जान या माल का ख़ौफ़ हो तो ऐसे वक़्त सिर्फ़ ज़ाहिरी बरताव जाइज़ है।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ ؕ وَ یَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ

मा'लूम है और जानता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और हर चीज़ पर **अल्लाह** का

قَدِیْرٌ ﴿۲۹﴾ یَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَیْرٍ مُّحْضَرًا ۚۛ وَّ مَا

क़ाबू है जिस दिन हर जान ने जो भला काम किया हाज़िर पाएगी[62] और जो

عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚۛ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَیْنَهَا وَ بَیْنَهٗۤ اَمَدًۢا بَعِیْدًا ؕ معانقة ۳

बुरा काम किया उम्मीद करेगी काश मुझ में और इस में दूर का फ़ासिला होता[63]

وَ یُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۳۰﴾ ع قُلْ اِنْ كُنْتُمْ

और **अल्लाह** तुम्हें अपने अ़ज़ाब से डराता है और **अल्लाह** बन्दों पर मेहरबान है ऐ मह़बूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम

تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ

अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ **अल्लाह** तुम्हें दोस्त रखेगा[64] और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और **अल्लाह**

غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۳۱﴾ قُلْ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

बख़्शने वाला मेहरबान है तुम फ़रमा दो कि हुक्म मानो **अल्लाह** और रसूल का[65] फिर अगर वोह मुंह फेरें तो **अल्लाह**

لَا یُحِبُّ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۲﴾ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤی اٰدَمَ وَ نُوْحًا وَّ اٰلَ اِبْرٰهِیْمَ

को ख़ुश नहीं आते काफ़िर बेशक **अल्लाह** ने चुन लिया आदम और नूह और इब्राहीम की आल

وَ اٰلَ عِمْرٰنَ عَلَی الْعٰلَمِیْنَ ﴿۳۳﴾ لا ذُرِّیَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَ اللّٰهُ

और इमरान की आल को सारे जहान से[66] येह एक नस्ल है एक दूसरे से[67] और **अल्लाह**

62 : या'नी रोज़े क़ियामत हर नफ़्स को आ'माल की जज़ा मिलेगी और इस में कुछ कमी व कोताही न होगी। 63 : या'नी मैं ने येह बुरा काम न किया होता। 64 : इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** की मह़ब्बत का दा'वा जब ही सच्चा हो सकता है जब आदमी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का मुत्तबेअ़ हो और हुज़ूर की इत़ाअ़त इख़्तियार करे। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم कुरैश के पास ठहरे, जिन्हों ने ख़ानए का'बा में बुत नस्ब किये थे और उन्हें सजा सजा कर उन को सज्दा कर रहे थे। हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ गुरोहे क़ुरैश ! ख़ुदा की क़सम ! तुम अपने आबा ह़ज़रते इब्राहीम और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام के दीन के ख़िलाफ़ हो गए। क़ुरैश ने कहा कि हम इन बुतों को **अल्लाह** की मह़ब्बत में पूजते हैं ताकि येह हमें **अल्लाह** से क़रीब करें। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि मह़ब्बते इलाही का दा'वा सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ व फ़रमां बरदारी के बिग़ैर क़ाबिले क़बूल नहीं, जो इस दा'वे का सुबूत देना चाहे हुज़ूर की ग़ुलामी करे। और हुज़ूर ने बुत परस्ती को मन्अ़ फ़रमाया तो बुत परस्ती करने वाला हुज़ूर का ना फ़रमान और मह़ब्बते इलाही के दा'वे में झूटा है। 65 : येही **अल्लाह** की मह़ब्बत की निशानी है और **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त बिग़ैर इत़ाअ़ते रसूल नहीं हो सकती। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : जिस ने मेरी ना फ़रमानी की उस ने **अल्लाह** की ना फ़रमानी की। 66 : यहूद ने कहा था कि हम ह़ज़रते इब्राहीम व इस्ह़ाक़ व या'क़ूब عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद से हैं और उन्हीं के दीन पर हैं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बता दिया गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन ह़ज़रात को इस्लाम के साथ बरगुज़ीदा किया था और तुम ऐ यहूद ! इस्लाम पर नहीं हो तो तुम्हारा येह दा'वा ग़लत़ है। 67 : इन में बाहम नस्ली तअ़ल्लुक़ात भी हैं और आपस में येह ह़ज़रात एक दूसरे के मुआ़विनो मददगार भी।

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ

सुनता जानता है जब इमरान की बीबी ने अ़र्ज़ की[68] ऐ रब मेरे मैं तेरे लिये मन्नत मानती हूं जो मेरे पेट

بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا

में है कि ख़ालिस तेरी ही ख़िदमत में रहे[69] तो तू मुझ से क़बूल कर ले बेशक तू ही है सुनता जानता फिर जब

وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ

उसे जना बोली ऐ रब मेरे येह तो मैं ने लड़की जनी[70] और अल्लाह को ख़ूब मा'लूम है जो कुछ वोह जनी

وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّيْٓ اُعِيْذُهَا بِكَ

और वोह लड़का जो उस ने मांगा इस लड़की सा नहीं[71] और मैं ने इस का नाम मरयम रखा[72] और मैं इसे और इस की औलाद को तेरी

وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ

पनाह में देती हूं रांदे हुए शैतान से तो उसे उस के रब ने अच्छी तरह क़बूल किया[73]

وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا

और उसे अच्छा परवान चढ़ाया[74] और उसे ज़करिय्या की निगहबानी में दिया जब ज़करिय्या उस के पास उस की

68 : इमरान दो हैं : **एक** इमरान बिन यस्हुर बिन फ़ाहस बिन लावा बिन या'कूब येह तो हज़रते मूसा व हारून के वालिद हैं, **दूसरे** इमरान बिन मासान येह हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वालिदा मरयम के वालिद हैं। दोनों इमरानों के दरमियान एक हज़ार आठ सो बरस का फ़र्क़ है। यहां दूसरे इमरान मुराद हैं, इन की बीबी साहिबा का नाम हन्ना बिन्ते फ़ाकूज़ा है, येह मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वालिदा हैं। **69 :** और तेरी इबादत के सिवा दुन्या का कोई काम उस के मुतअ़ल्लिक़ न हो, बैतुल मक़्दिस की ख़िदमत उस के ज़िम्मे हो। उलमा ने वाक़िआ़ इस तरह ज़िक्र किया है कि हज़रते ज़करिय्या व इमरान दोनों हम ज़ुल्फ़ थे। फ़ाकूज़ा की दुख़्तर ईशाअ़ जो हज़रते यहूया की वालिदा हैं और इन की बहन हन्ना जो फ़ाकूज़ा की दूसरी दुख़्तर और हज़रते मरयम की वालिदा हैं, वोह इमरान की बीबी थीं। एक ज़माने तक हन्ना के औलाद नहीं हुई यहां तक कि बुढ़ापा आ गया और मायूसी हो गई। येह सालिहीन का ख़ानदान था और येह सब लोग अल्लाह के मक़्बूल बन्दे थे। एक रोज़ हन्ना ने एक दरख़्त के साए में एक चिड़िया देखी जो अपने बच्चे को भरा (खिला) रही थी। येह देख कर आप के दिल में औलाद का शौक़ पैदा हुवा और बारगाहे इलाही में दुआ़ की, कि या रब ! अगर तू मुझे बच्चा दे तो मैं उस को बैतुल मक़्दिस का ख़ादिम बनाऊं और उस की ख़िदमत के लिये हाज़िर कर दूं। जब वोह हामिला हुईं और उन्हों ने येह नज़्र मान ली तो उन के शोहर ने फ़रमाया कि येह तुम ने क्या किया ? अगर लड़की हो गई तो ! वोह इस क़ाबिल कहां है ? उस ज़माने में लड़कों को ख़िदमते बैतुल मक़्दिस के लिये दिया जाता था और लड़कियां अ़वारिज़े निसाई और ज़नाना कमज़ोरियों और मर्दों के साथ न रह सकने की वज्ह से इस क़ाबिल नहीं समझी जाती थीं, इस लिये इन साहिबों को शदीद फ़िक्र लाहिक़ हुई और हन्ना के वज़्ए हम्ल से क़ब्ल इमरान का इन्तिक़ाल हो गया। **70 :** हन्ना ने येह कलिमा ए'तिज़ार के तौर पर (या'नी उ़ज़्र बयान करते हुए) कहा और उन को हस्रतो ग़म हुवा कि लड़की हुई तो नज़्र किस तरह पूरी हो सकेगी ? **71 :** क्यूं कि येह लड़की अल्लाह की अ़ता है और उस के फ़ज़्ल से फ़रज़न्द से ज़ियादा फ़ज़ीलत रखने वाली है। येह साहिब ज़ादी हज़रते मरयम थीं और अपने ज़माने की औरतों में सब से अज्मल व अफ़्ज़ल थीं। **72 :** मरयम के मा'ना आबिदा हैं। **73 :** और नज़्र में लड़के की जगह हज़रते मरयम को क़बूल फ़रमाया। हन्ना ने विलादत के बा'द हज़रते मरयम को एक कपड़े में लपेट कर बैतुल मक़्दिस में अहबार के सामने रख दिया। येह अहबार हज़रते हारून की औलाद में थे और बैतुल मक़्दिस में इन का मन्सब ऐसा था जैसा कि का'बा शरीफ़ में हजबा का, चूंकि हज़रते मरयम इन के इमाम और इन के साहिबे क़ुरबान की दुख़्तर थीं और इन का ख़ानदान बनी इसराईल में बहुत आ'ला और अहले इ़ल्म का ख़ानदान था, इस लिये इन सब ने जिन की ता'दाद सत्ताईस थी, हज़रते मरयम को लेने और और इन का तकफ़्फ़ुल (देखभाल) करने की रग़बत की। हज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं इन का सब से ज़ियादा हक़दार हूं क्यूं कि मेरे घर में इन की ख़ाला हैं। मुआ़मला इस पर ख़त्म हुवा कि क़ुरआ़ डाला जाए, क़ुरआ़ हज़रते ज़करिय्या ही के नाम पर निकला। **74 :** हज़रते मरयम एक दिन में इतना बढ़ती थीं

www.dawateislami.net

الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ

नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़्क़ पाते[75] कहा ऐ मरयम येह तेरे पास कहां से आया बोलीं

هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۷﴾

वोह अल्लाह के पास से है बेशक अल्लाह जिसे चाहे बे गिनती दे[76]

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً

यहां[77] पुकारा ज़करिय्या अपने रब को बोला ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी

طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۸﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي

औलाद बेशक तू ही है दुआ सुनने वाला तो फ़िरिश्तों ने उसे आवाज़ दी और वोह अपनी नमाज़ की जगह खड़ा नमाज़

الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ

पढ़ रहा था[78] बेशक अल्लाह आप को मुज़्दा देता है यहया का जो अल्लाह की तरफ़ के एक कलिमे की[79] तस्दीक़ करेगा

وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۳۹﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ

और सरदार[80] और हमेशा के लिये औरतों से बचने वाला और नबी हमारे ख़ासों में से[81] बोला ऐ मेरे रब मेरे लड़का कहां

غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا

से होगा मुझे तो पहुंच गया बुढ़ापा[82] और मेरी औरत बांझ[83] फ़रमाया अल्लाह यूं ही करता है जो

जितना और बच्चे एक साल में। **75 :** बे फ़स्ल मेवे जो जन्नत से उतरते और हज़रते मरयम ने किसी औरत का दूध न पिया। **76 :** हज़रते मरयम ने सिग़र सिनी में कलाम किया जब कि वोह पालने (झूले) में परवरिश पा रही थीं, जैसा कि इन के फ़रज़न्द हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इसी हाल में कलाम फ़रमाया। **मस्अला :** येह आयत करामाते औलिया के सुबूत की दलील है कि अल्लाह तआला इन के हाथों पर ख़वारिक़ (करामात) ज़ाहिर फ़रमाता है। हज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने जब येह देखा तो फ़रमाया : जो ज़ाते पाक मरयम को बे वक़्त, बे फ़स्ल और बिग़ैर सबब के मेवा अ़ता फ़रमाने पर क़ादिर है, वोह बेशक इस पर क़ादिर है कि मेरी बांझ बीबी को नई तन्दुरुस्ती दे और मुझे इस बुढ़ापे की उम्र में उम्मीद मुन्क़तअ़ हो जाने के बा'द फ़रज़न्द अ़ता करे। ब ई ख़याल आप ने दुआ की जिस का अगली आयत में बयान है। **77 :** या'नी मेहराबे बैतुल मक़्दिस में दरवाज़े बन्द कर के दुआ की। **78 :** हज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام आलिमे कबीर थे। क़ुरबानियां बारगाहे इलाही में आप ही पेश किया करते थे और मस्जिद शरीफ़ में बिग़ैर आप के इज़्न के कोई दाख़िल नहीं हो सकता था। जिस वक़्त मेहराब में आप नमाज़ में मश्ग़ूल थे और बाहर आदमी दुख़ूल की इजाज़त का इन्तिज़ार कर रहे थे, दरवाज़ा बन्द था, अचानक आप ने एक सफ़ेद पोश जवान देखा, वोह हज़रते जिब्रील थे, उन्हों ने आप को फ़रज़न्द की बिशारत दी, जो "اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ" में बयान फ़रमाई गई। **79 :** कलिमे से मुराद हज़रते ईसा इब्ने मरयम हैं कि इन्हें अल्लाह तआला ने "कुन" फ़रमा कर बिग़ैर बाप के पैदा किया, और इन पर सब से पहले ईमान लाने वाले और इन की तस्दीक़ करने वाले हज़रते यहया हैं, जो हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से उम्र में छ[6] माह बड़े थे। येह दोनों हज़रात ख़ालाज़ाद भाई थे। हज़रते यहया की वालिदा अपनी बहन हज़रते मरयम से मिलीं तो उन्हें अपने हामिला होने पर मुत्तलअ़ किया। हज़रते मरयम ने फ़रमाया : मैं भी हामिला हूं। हज़रते यहया की वालिदा ने कहा : ऐ मरयम ! मुझे मा'लूम होता है कि मेरे पेट का बच्चा तुम्हारे पेट के बच्चे को सज्दा करता है। **80 :** "सय्यिद" उस रईस को कहते हैं जो मख़्दूम व मुताअ़ हो। हज़रते यहया मोमिनीन के सरदार और इल्मो हिल्म व दीन में उन के रईस थे। **81 :** हज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने बराहे तअ़ज्जुब अ़र्ज़ किया : **82 :** और उम्र एक सो बीस साल की हो चुकी। **83 :** उन की उम्र अठानवे साल की। मक़्सूद सुवाल से येह है कि बेटा किस तरह अ़ता होगा ? आया मेरी जवानी लौटाई जाएगी और बीबी का

www.dawateislami.net

يَشَآءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

चाहे[84] अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिये कोई निशानी कर दे[85] फ़रमाया तेरी निशानी येह है कि तीन दिन तू लोगों

ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ

से बात न करे मगर इशारे से और अपने रब की बहुत याद कर[86] और कुछ दिन रहे (शाम) और तड़के (सुब्ह)

وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾ ع وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ ع ٤

उस की पाकी बोल और जब फ़िरिश्तों ने कहा ऐ मरयम बेशक अल्लाह ने तुझे चुन लिया[87] और ख़ूब सुथरा किया[88]

وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ

और आज सारे जहां की औ़रतों से तुझे पसन्द किया[89] ऐ मरयम अपने रब के हुज़ूर अदब से खड़ी हो[90] और उस के लिये सज्दा कर

وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ

और रुकूअ़ वालों के साथ रुकूअ़ कर येह ग़ैब की ख़बरें हैं कि हम ख़ुफ़्या तौ़र पर तुम्हें बताते हैं[91]

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا

और तुम उन के पास न थे जब वोह अपनी क़लमों से क़ुरआ़ डालते थे कि मरयम किस की परवरिश में रहें और तुम

كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ

उन के पास न थे जब वोह झगड़ रहे थे[92] और याद करो जब फ़िरिश्तों ने मरयम से कहा ऐ मरयम अल्लाह

يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِي

तुझे बिशारत देता है अपने पास से एक कलिमे की[93] जिस का नाम है मसीह़ ईसा मरयम का बेटा रूदार होगा[94]

बांझ होना दूर किया जाएगा या हम दोनों अपने ह़ाल पर रहेंगे। **84 :** बुढ़ापे में फ़रज़न्द अ़ता करना उस की क़ुदरत से कुछ बईद नहीं। **85 :** जिस से मुझे अपनी बीबी के ह़म्ल का वक़्त मा'लूम हो ताकि मैं और ज़ियादा शुक्र व इ़बादत में मसरूफ़ होउं। **86 :** चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि आदमियों के साथ गुफ़्तगू करने से ज़बाने मुबारक तीन रोज़ तक बन्द रही और तस्बीह़ व ज़िक्र पर आप क़ादिर रहे और येह एक अ़ज़ीम मो'जिज़ा है कि जिस में जवारेह़ (आ'ज़ा) सह़ीह़ो सालिम हों और ज़बान से तस्बीह़ो तक़्दीस के कलिमात अदा होते रहें मगर लोगों के साथ गुफ़्तगू न हो सके और येह अ़लामत इस लिये मुक़र्रर की गई कि इस ने'मते अ़ज़ीमा के अदाए ह़क़ में ज़बान ज़िक्रो शुक्र के सिवा और किसी बात में मश्ग़ूल न हो। **87 :** कि बा वुजूद औ़रत होने के बैतुल मक़्दिस की ख़िदमत के लिये नज़्र में क़बूल फ़रमाया और येह बात इन के सिवा किसी औ़रत को मुयस्सर न आई। इसी त़रह़ इन के लिये जन्नती रिज़्क़ भेजना, ह़ज़रते ज़करिय्या को इन का कफ़ील बनाना, येह ह़ज़रते मरयम की बरगुज़ीदगी है। **88 :** मर्द रसीदगी से और गुनाहों से और बक़ौल बा'ज़े ज़नाने अ़वारिज़ से। **89 :** कि बिग़ैर बाप के बेटा दिया और मलाएका का कलाम सुनवाया। **90 :** जब फ़िरिश्तों ने येह कहा तो ह़ज़रते मरयम ने इतना त़वील क़ियाम किया कि आप के क़दमे मुबारक पर वरम आ गया और पाउं फट कर ख़ून जारी हो गया। **91 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ग़ैब के उ़लूम अ़ता फ़रमाए। **92 :** बा वुजूद इस के आप का इन वाक़िआ़त की इत्तिलाअ़ देना दलीले क़वी है इस की, कि आप को ग़ैबी उ़लूम अ़ता फ़रमाए गए। **93 :** या'नी एक फ़रज़न्द की। **94 :** साह़िबे जाहो मन्ज़िलत।

www.dawateislami.net

الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ

दुन्या और आख़िरत में और क़ुर्ब वाला[95] और लोगों से बात करेगा पालने (झूले) में[96]

وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ

और पक्की उ़म्र में[97] और ख़ासों में होगा बोली ऐ मेरे रब मेरे बच्चा कहां से होगा मुझे तो

يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا

किसी शख़्स ने हाथ न लगाया[98] फ़रमाया अल्लाह यूं ही पैदा करता है जो चाहे जब किसी काम का हुक्म फ़रमाए

فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٧﴾ وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ

तो उस से येही कहता है कि हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है और अल्लाह उसे सिखाएगा किताब और हिक्मत

وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّيْ قَدْ

और तौरैत और इन्जील और रसूल होगा बनी इसराईल की त़रफ़ येह फ़रमाता हुवा कि

جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ

मैं तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूं[99] तुम्हारे रब की त़रफ़ से कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्द की सी मूरत बनाता हूं

فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ

फिर उस में फूंक मारता हूं तो वोह फ़ौरन परिन्द हो जाती है अल्लाह के हुक्म से[100] और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धे और सपेद (सफ़ेद) दाग़ वाले को[101]

وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ

और मैं मुर्दे जिलाता (ज़िन्दा करता) हूं अल्लाह के हुक्म से[102] और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते और जो अपने घरों में जम्अ़

95 : बारगाहे इलाही में। **96 :** बात करने की उ़म्र से क़ब्ल **97 :** आस्मान से नुज़ूल के बा'द। इस आयत से साबित होता है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान से ज़मीन की त़रफ़ उतरेंगे, जैसा कि अह़ादीस में वारिद हुवा है और दज्जाल को क़त्ल करेंगे। **98 :** और दस्तूर येह है कि बच्चा औ़रत व मर्द के इख़्तिलात़ (मिलाप) से होता है, तो मुझे बच्चा किस त़रह़ अ़त़ा होगा निकाह़ से या यूंही बिग़ैर मर्द के ? **99 :** जो मेरे दा'वाए नुबुव्वत के सिद्क़ की दलील है। **100 :** जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने नुबुव्वत का दा'वा किया और मो'जिज़ात दिखाए तो लोगों ने दरख़्वास्त की, कि आप एक चमगादड़ पैदा करें। आप ने मिट्टी से चमगादड़ की सूरत बनाई, फिर उस में फूंक मारी, तो वोह उड़ने लगी। चमगादड़ की ख़ुसूसिय्यत येह है कि वोह उड़ने वाले जानवरों में बहुत अक्मल और अ़जीब तर है और क़ुदरत पर दलालत करने में औरों से अब्लग़ (ज़ियादा क़वी है) क्यूं कि वोह बिग़ैर परों के तो उड़ती है और दांत रखती है और हंसती है और उस की मादा के छाती होती है और बच्चा जनती है बा वुजूदे कि उड़ने वाले जानवरों में येह बातें नहीं हैं। **101 :** जिस का बरस आ़म हो गया हो और अत़िब्बा उस के इलाज से आ़जिज़ हों, चूंकि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने में त़िब इन्तिहाए उ़रूज पर थी और इस के माहिरीन अम्रे इलाज में यदे त़ूला (बड़ी महारत) रखते थे, इस लिये उन को इसी क़िस्म के मो'जिज़े दिखाए गए ताकि मा'लूम हो कि त़िब के त़रीक़े से जिस का इलाज मुम्किन नहीं है उस को तन्दुरुस्त कर देना यक़ीनन मो'जिज़ा और नबी के सिद्क़े नुबुव्वत की दलील है। वह्ब का क़ौल है कि अक्सर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास एक एक दिन में पचास पचास हज़ार मरीज़ों का इज्तिमाअ़ हो जाता था, उन में जो चल सकता था वोह ह़ाज़िरे ख़िदमत होता था और जिसे चलने की त़ाक़त न होती उस के पास ख़ुद ह़ज़रत तशरीफ़ ले जाते और दुआ़ फ़रमा कर उस को तन्दुरुस्त करते और अपनी रिसालत पर ईमान लाने की शर्त़ कर लेते। **102 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने चार शख़्सों को ज़िन्दा किया :

www.dawateislami.net

بُيُوْتِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٤٩ۚ وَمُصَدِّقًا

कर रखते हो[103] बेशक इन बातों में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो और तस्दीक़ करता

لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ

आया हूं अपने से पहली किताब तौरैत की और इस लिये कि ह़लाल करूं तुम्हारे लिये कुछ वोह चीज़ें जो तुम पर ह़राम थीं[104]

وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝٥٠ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ

और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से निशानी लाया हूं तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो बेशक मेरा तुम्हारा

وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٥١ فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى

सब का रब अल्लाह है तो उसी को पूजो[105] येह है सीधा रास्ता फिर जब ईसा ने

مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ

उन से कुफ़्र पाया[106] बोला कौन मेरे मददगार होते हैं अल्लाह की त़रफ़ ह़वारियों ने कहा[107] हम

एक आ़ज़र जिस को आप के साथ इख़्लास था, जब उस की ह़ालत नाज़ुक हुई तो उस की बहन ने आप को इत्तिलाअ़ दी मगर वोह आप से तीन रोज़ की मसाफ़त के फ़ासिले पर था, जब आप तीन रोज़ में वहां पहुंचे तो मा'लूम हुवा कि उस के इन्तिक़ाल को तीन रोज़ हो चुके, आप ने उस की बहन से फ़रमाया : हमें उस की क़ब्र पर ले चल वोह ले गई। आप ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ फ़रमाई आ़ज़र बि इज़्ने इलाही ज़िन्दा हो कर क़ब्र से बाहर आया और मुद्दत तक ज़िन्दा रहा और उस के औलाद हुई। एक बुढ़िया का लड़का जिस का जनाज़ा ह़ज़रत के सामने जा रहा था, आप ने उस के लिये दुआ़ फ़रमाई, वोह ज़िन्दा हो कर ना'श बरदारों के कन्धों से उतर पड़ा कपड़े पहने घर आया ज़िन्दा रहा, औलाद हुई। एक आ़शिर की लड़की शाम को मरी अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दुआ़ से उस को ज़िन्दा किया। एक साम बिन नूह़ जिन की वफ़ात को हज़ारों बरस गुज़र चुके थे, लोगों ने ख़्वाहिश की, कि आप उन को ज़िन्दा करें। आप उन की निशान देही से क़ब्र पर पहुंचे और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की साम ने सुना कोई कहने वाला कहता है : ''اَجِبْ رُوْحَ اللّٰهِ'' (या'नी ईसा عَلَیْہِ السَّلَام को जवाब दें) येह सुनते ही वोह मरऊ़ब और ख़ौफ़ज़दा उठ खड़े हुए और उन्हें गुमान हुवा कि क़ियामत क़ाइम हो गई, इस होल (ख़ौफ़) से उन का निस्फ़ सर सफ़ेद हो गया, फिर वोह ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام पर ईमान लाए और उन्हों ने ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام से दरख़्वास्त की, कि दोबारा उन्हें सकराते मौत की तक्लीफ़ न हो बिग़ैर इस के वापस किया जाए चुनान्चे उसी वक़्त उन का इन्तिक़ाल हो गया, और बि इज़्निल्लाह फ़रमाने में रद है नसारा का जो ह़ज़रते मसीह़ की उलूहिय्यत के क़ाइल थे। **103 :** जब ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات ने बीमारों को अच्छा किया और मुर्दों को ज़िन्दा किया तो बा'ज़ लोगों ने कहा कि येह तो जादू है और कोई मो'जिज़ा दिखाइये ! तो आप ने फ़रमाया कि जो तुम खाते हो और जो जम्अ़ कर रखते हो, मैं उस की तुम्हें ख़बर देता हूं। इसी से साबित हुवा कि ग़ैब के उ़लूम अम्बिया का मो'जिज़ा हैं, और ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के दस्ते मुबारक पर येह मो'जिज़ा भी ज़ाहिर हुवा, आप आदमी को बता देते थे जो वोह कल खा चुका और आज खाएगा और जो अगले वक़्त के लिये तय्यार कर रखा। आप के पास बच्चे बहुत से जम्अ़ हो जाते थे, आप उन्हें बताते थे कि तुम्हारे घर फ़ुलां चीज़ तय्यार हुई है, तुम्हारे घर वालों ने फ़ुलां फ़ुलां चीज़ खाई है, फ़ुलां चीज़ तुम्हारे लिये उठा रखी है, बच्चे घर जाते रोते घर वालों से वोह चीज़ मांगते घर वाले वोह चीज़ देते और उन से कहते कि तुम्हें किस ने बताया ? बच्चे कहते : ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने, तो लोगों ने अपने बच्चों को आप के पास आने से रोका और कहा : वोह जादूगर हैं, उन के पास न बैठो और एक मकान में सब बच्चों को जम्अ़ कर दिया। ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام बच्चों को तलाश करते तशरीफ़ लाए तो लोगों ने कहा : वोह यहां नहीं हैं। आप ने फ़रमाया कि फिर इस मकान में कौन है ? उन्हों ने कहा : सुअर हैं। फ़रमाया : ऐसा ही होगा। अब जो दरवाज़ा खोलते हैं तो सब सुअर ही सुअर थे। अल ह़ासिल ग़ैब की ख़बरें देना अम्बिया का मो'जिज़ा है और बे वसातते अम्बिया कोई बशर उमूरे ग़ैब पर मुत्तलअ़ नहीं हो सकता। **104 :** जो शरीअ़ते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام में ह़राम थीं जैसे कि ऊंट के गोश्त, मछली, कुछ परिन्द। **105 :** येह अपनी अ़ब्दिय्यत का इक़रार और अपनी रबूबिय्यत की नफ़ी है। इस में नसारा का रद है। **106 :** या'नी जब ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने देखा कि यहूद अपने कुफ़्र पर क़ाइम हैं और आप के क़त्ल का इरादा रखते हैं और इतनी आयाते बाहिरात और मो'जिज़ात से असर पज़ीर नहीं हुए और इस का सबब येह था कि उन्हों ने पहचान लिया था कि आप ही वोह मसीह़ हैं जिन

اَنْصَارُ اللّٰهِ ؕ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا بِمَاۤ

दीने ख़ुदा के मददगार हैं हम अल्लाह पर ईमान लाए और आप गवाह हो जाएं कि हम मुसल्मान हैं[108] ऐ रब हमारे हम उस पर ईमान लाए जो

اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۵۳﴾ وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ

तूने उतारा और रसूल के ताबेअ़ हुए तो हमें ह़क़ पर गवाही देने वालों में लिख ले और काफ़िरों ने मक्र किया[109] और अल्लाह ने उन के हलाक की

اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۵۴﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰۤى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ

ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाई और अल्लाह सब से बेहतर छुपी तदबीर वाला है[110] याद करो जब अल्लाह ने फ़रमाया ऐ ईसा मैं तुझे पूरी उ़म्र तक पहुंचाऊंगा[111]

وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ

और तुझे अपनी त़रफ़ उठा लूंगा[112] और तुझे काफ़िरों से पाक कर दूंगा और तेरे

اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ

पैरवों को[113] क़ियामत तक तेरे मुन्किरों पर[114] ग़लबा दूंगा फिर तुम सब मेरी त़रफ़ पलट कर आओगे

فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۵۵﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

तो मैं तुम में फ़ैसला फ़रमा दूंगा जिस बात में झगड़ते हो तो वोह जो काफ़िर हुए

की तौरैत में बिशारत दी गई है और आप उन के दीन को मन्सूख़ करेंगे तो जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दा'वत का इज़्हार फ़रमाया तो येह उन पर बहुत शाक़ गुज़रा और वोह आप के ईज़ा व क़त्ल के दरपै हुए और आप के साथ उन्हों ने कुफ़्र किया। **107 :** ह़वारी वोह मुख़्लिसीन हैं जो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दीन के मददगार थे और आप पर अव्वल ईमान लाए येह बारह अश्ख़ास थे। **108 मस्अला :** इस आयत से ईमान व इस्लाम के एक होने पर इस्तिद्लाल किया जाता है और येह भी मा'लूम होता है कि पहले अम्बिया का दीन इस्लाम था न कि यहूदिय्यत व नसरानिय्यत। **109 :** या'नी कुफ़्फ़ारे बनी इसराईल ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ मक्र किया कि धोके के साथ आप के क़त्ल का इन्तिज़ाम किया और अपने एक शख़्स को इस काम पर मुक़र्रर कर दिया। **110 : अल्लाह** तआ़ला ने उन के मक्र का येह बदला दिया कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को आस्मान पर उठा लिया, और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शबाहत (शक्लो सूरत) उस शख़्स पर डाल दी जो उन के क़त्ल के लिये आमादा हुवा था चुनान्चे यहूद ने उस को इसी शुबे पर क़त्ल कर दिया। **मस्अला :** लफ़्ज़ "मक्र" लुग़ते अ़रब में "सित्र" या'नी पोशीदगी के मा'ना में है। इसी लिये ख़ुफ़्या तदबीर को भी मक्र कहते हैं और वोह तदबीर अगर अच्छे मक़्सद के लिये हो तो महमूद और किसी क़बीह़ ग़रज़ के लिये हो तो मज़्मूम होती है, मगर उर्दू ज़बान में येह लफ़्ज़ फ़रेब के मा'ना में मुस्ता'मल होता है, इस लिये हरगिज़ शाने इलाही में न कहा जाएगा, और अब चूंकि अ़रबी में भी ब मा'ना ख़द्अ़ के मा'रूफ़ हो गया है, इस लिये अ़रबी में भी शाने इलाही में इस का इ़त्लाक़ जाइज़ नहीं, आयत में जहां कहीं वारिद हुवा वोह ख़ुफ़्या तदबीर के मा'ना में है। **111 :** या'नी तुम्हें कुफ़्फ़ार क़त्ल न कर सकेंगे। (مدارک وغیرہ) **112 :** आस्मान पर महल्ले करामत और मक़र्रे मलाएका में बिग़ैर मौत के। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़ज़रते ईसा मेरी उम्मत पर ख़लीफ़ा हो कर नाज़िल होंगे, सलीब तोड़ेंगे, ख़नाज़ीर को क़त्ल करेंगे, चालीस साल रहेंगे, निकाह़ फ़रमाएंगे, औलाद होगी, फिर आप का विसाल होगा, वोह उम्मत कैसे हलाक हो जिस के अव्वल मैं हूं और आख़िर ईसा और वस्त में मेरे अहले बैत में से महदी। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام मनारए शर्क़ी दिमश्क़ पर नाज़िल होंगे। येह भी वारिद हुवा कि हुज़ूरे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم में मदफ़ून होंगे। **113 :** या'नी मुसल्मानों को जो आप की नुबुव्वत की तस्दीक़ करने वाले हैं। **114 :** जो यहूद हैं।

www.dawateislami.net

فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ

मैं उन्हें दुन्या व आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब करूंगा और उन का कोई

نّٰصِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ

मददगार न होगा और वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अल्लाह उन का नेग (अज्र)

اُجُوْرَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٧﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ

उन्हें भरपूर देगा और ज़ालिम अल्लाह को नहीं भाते येह हम तुम पर पढ़ते हैं कुछ

الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿٥٨﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ

आयतें और हिक्मत वाली नसीहत ईसा की कहावत अल्लाह के नज़्दीक आदम की त़रह़ है[115]

خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٥٩﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا

उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है ऐ सुनने वाले येह तेरे रब की त़रफ़ से ह़क़ है तो

تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ

शक वालों में न होना फिर ऐ महबूब जो तुम से ईसा के बारे में हुज्जत करें बा'द इस के कि तुम्हें इल्म

الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ

आ चुका तो उन से फ़रमा दो आओ हम तुम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औ़रतें और तुम्हारी औ़रतें

وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۟ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى

और अपनी जानें और तुम्हारी जानें फिर मुबाहला करें तो झूटों पर अल्लाह की

الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ؕ

ला'नत डालें[116] येही बेशक सच्चा बयान है[117] और अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं[118]

115 शाने नुज़ूल : नसाराए नजरान का एक वफ़्द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया और वोह लोग हुज़ूर से कहने लगे : आप गुमान करते हैं कि ईसा अल्लाह के बन्दे हैं ? फ़रमाया : हां, उस के बन्दे और उस के रसूल और उस के कलिमे जो कुंवारी बतूल अ़ज़्रा की त़रफ़ इल्क़ा किये गए। नसारा येह सुन कर बहुत ग़ुस्से में आए और कहने लगे या मुह़म्मद ! क्या तुम ने कभी बे बाप का इन्सान देखा है ? इस से उन का मत़लब येह था कि वोह ख़ुदा के बेटे हैं। (مَعَاذَاللّٰه) इस पर येह आयत नाज़िल हुई और येह बताया गया कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام सिर्फ़ बिग़ैर बाप ही के हुए और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام तो मां और बाप दोनों के बिग़ैर मिट्टी से पैदा किये गए। तो जब उन्हें अल्लाह की मख़्लूक़ और बन्दा मानते हो तो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को अल्लाह की मख़्लूक़ व बन्दा मानने में क्या तअ़ज्जुब है। **116 :** जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने नसाराए नजरान को येह आयत पढ़ कर सुनाई और मुबाहले की दा'वत दी (या'नी फ़रीक़ैन का एक दूसरे के लिये इस त़रह़ बद दुआ़ करना कि जो झूटा हो वोह हलाक हो जाए मुबाहला कहलाता है।) तो कहने लगे कि हम ग़ौर और मश्वरा कर लें कल आप को जवाब देंगे। जब वोह जम्अ़ हुए तो उन्हों ने अपने सब से बड़े आ़लिम और साह़िबे राय शख़्स आ़क़िब से कहा कि ऐ अ़ब्दुल

www.dawateislami.net

وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٢﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ

और बेशक **अल्लाह** ही ग़ालिब है हिक्मत वाला फिर अगर वोह मुंह फेरें तो **अल्लाह** फ़सादियों को

بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۭ بَيْنَنَا

जानता है तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो ऐसे कलिमे की त़रफ़ आओ जो हम में तुम में

وَ بَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَ لَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّ لَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا

यक्सां है[119] येह कि इ़बादत न करें मगर ख़ुदा की और उस का शरीक किसी को न करें[120] और हम में कोई एक दूसरे

بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا

को रब न बना ले **अल्लाह** के सिवा[121] फिर अगर वोह न मानें तो कह दो तुम गवाह रहो कि हम

مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَ مَاۤ اُنْزِلَتِ

मुसल्मान हैं ऐ किताब वालो इब्राहीम के बारे में क्यूं झगड़ते हो तौरैत व

التَّوْرٰىةُ وَ الْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾ هٰۤاَنْتُمْ

इन्जील तो न उतरी मगर उन के बा'द तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[122] सुनते हो येह जो

मसीह़ आप की क्या राय है ? उस ने कहा कि ऐ जमाअ़ते नसारा तुम पहचान चुके कि मुह़म्मद नबिय्ये मुरसल तो ज़रूर हैं, अगर तुम ने उन से मुबाहला किया तो सब हलाक हो जाओगे। अब अगर नसरानिय्यत पर क़ाइम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ो और घर को लौट चलो। येह मश्वरा होने के बा'द वोह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो उन्हों ने देखा कि हुज़ूर की गोद में तो इमामे हुसैन हैं और दस्ते मुबारक में ह़सन का हाथ और फ़ातिमा और अ़ली हुज़ूर के पीछे हैं (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) और हुज़ूर उन सब से फ़रमा रहे हैं कि जब मैं दुआ़ करूं तो तुम सब आमीन कहना। नजरान के सब से बड़े नसरानी आ़लिम (पादरी) ने जब इन ह़ज़रात को देखा तो कहने लगा : ऐ जमाअ़ते नसारा ! मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूं कि अगर येह लोग **अल्लाह** से पहाड़ को हटा देने की दुआ़ करें तो **अल्लाह** तआ़ला पहाड़ को जगह से हटा दे। इन से मुबाहला न करना हलाक हो जाओगे और क़ियामत तक रूए ज़मीन पर कोई नसरानी बाक़ी न रहेगा। येह सुन कर नसारा ने हुज़ूर की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि मुबाहले की तो हमारी राय नहीं है। आख़िर कार उन्हों ने जिज़्या देना मन्ज़ूर किया मगर मुबाहले के लिये तय्यार न हुए। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! नजरान वालों पर अ़ज़ाब क़रीब आ ही चुका था अगर वोह मुबाहला करते तो बन्दरों और सुअरों की सूरत में मस्ख़ कर दिये जाते और जंगल आग से भड़क उठता, और नजरान और वहां के रहने वाले परिन्द तक नेस्तो नाबूद हो जाते और एक साल के अ़र्से में तमाम नसारा हलाक हो जाते। **117 :** कि ह़ज़रते ईसा **अल्लाह** के बन्दे और उस के रसूल हैं और इन का वोह ह़ाल है जो ऊपर मज़्कूर हो चुका। **118 :** इस में नसारा का भी रद है और तमाम मुश्रिकीन का भी। **119 :** और क़ुरआन और तौरैत और इन्जील इस में मुख़्तलिफ़ नहीं। **120 :** न ह़ज़रते ईसा को न ह़ज़रते उ़ज़ैर को न और किसी को। **121 :** जैसा कि यहूदो नसारा ने अह़बार व रहबान (यहूदी उ़लमा व ईसाई राहिबों) को बनाया कि उन्हें सज्दे करते और उन की इ़बादतें करते। (جمل) **122 शाने नुज़ूल :** नजरान के नसारा और यहूद के अह़बार में मुबाह़सा हुवा यहूदियों का दा'वा था कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام यहूदी थे और नसरानियों का येह दा'वा था कि आप नसरानी थे। येह निज़ाअ़ बहुत बढ़ा तो फ़रीक़ैन ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ह़कम माना और आप से फ़ैसला चाहा। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उ़लमाए तौरैत व इन्जील पर उन का कमाले जहल ज़ाहिर कर दिया गया कि इन में से हर एक का दा'वा इन के कमाले जहल की दलील है। यहूदिय्यत व नसरानिय्यत तौरैत व इन्जील के नुज़ूल के बा'द पैदा हुई और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़माना जिन पर तौरैत नाज़िल हुई ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से सदहा बरस बा'द है और ह़ज़रते ईसा जिन पर इन्जील नाज़िल हुई, इन का ज़माना ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द दो हज़ार बरस के क़रीब हुवा है और तौरैत व इन्जील किसी में आप को यहूदी या नसरानी नहीं फ़रमाया गया बा वुजूद इस के आप की निस्बत येह दा'वा जहल व ह़माक़त की इन्तिहा है।

www.dawateislami.net

هٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِیْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِیْمَا لَیْسَ

तुम हो[123] उस में झगड़े जिस का तुम्हें इल्म था[124] तो उस में[125] मुझ से क्यूं झगड़ते हो जिस का

لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ اِبْرٰهِیْمُ

तुम्हें इल्म ही नहीं और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते[126] इब्राहीम न

یَهُوْدِیًّا وَّ لَا نَصْرَانِیًّا وَّ لٰكِنْ كَانَ حَنِیْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ

यहूदी थे न नसरानी बल्कि हर बात़िल से जुदा मुसल्मान थे और मुश्रिकों से

الْمُشْرِكِیْنَ ﴿٦٧﴾ اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِیْمَ لَلَّذِیْنَ اتَّبَعُوْهُ وَ هٰذَا

न थे[127] बेशक सब लोगों से इब्राहीम के ज़ियादा ह़क़दार वोह थे जो उन के पैरव हुए[128] और येह

النَّبِیُّ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَ اللّٰهُ وَلِیُّ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿٦٨﴾ وَدَّتْ طَّآىٕفَةٌ

नबी[129] और ईमान वाले[130] और ईमान वालों का वाली **अल्लाह** है किताबियों का एक गुरौह

مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ یُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَ مَا یُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَ مَا

दिल से चाहता है कि किसी त़रह़ तुम्हें गुमराह कर दें और वोह अपने ही आप को गुमराह करते हैं और

یَشْعُرُوْنَ ﴿٦٩﴾ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَ اَنْتُمْ

उन्हें शुऊ़र नहीं[131] ऐ किताबियो **अल्लाह** की आयतों से क्यूं कुफ़्र करते हो ह़ालां कि तुम ख़ुद

تَشْهَدُوْنَ ﴿٧٠﴾ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُوْنَ

गवाह हो[132] ऐ किताबियो ह़क़ में बात़िल क्यूं मिलाते हो[133] और ह़क़ क्यूं

الْحَقَّ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٧١﴾ ع وَ قَالَتْ طَّآىٕفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا ركوع ٧

छुपाते हो ह़ालां कि तुम्हें ख़बर है और किताबियों का एक गुरौह बोला[134] वोह जो

123 : ऐ अहले किताब ! तुम **124 :** और तुम्हारी किताबों में इस की ख़बर दी गई थी या'नी नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के ज़ुहूर और आप की ना'त व सिफ़त की, जब येह सब कुछ जान पहचान कर भी तुम हु़ज़ूर पर ईमान न लाए और तुम ने इस में झगड़ा किया। **125 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام को यहूदी या नसरानी कहते हैं। **126 :** ह़क़ीक़ते ह़ाल येह है कि **127 :** तो न किसी यहूदी या नसरानी का अपने आप को दीन में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ मन्सूब करना सह़ीह़ हो सकता है न किसी मुश्रिक का। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस में यहूदो नसारा पर ता'रीज़ है कि वोह मुश्रिक हैं। **128 :** और उन के अ़हदे नुबुव्वत में उन पर ईमान लाए और उन की शरीअ़त पर आ़मिल रहे। **129 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم **130 :** और आप के उम्मती। **131 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल व हु़ज़ैफ़ा बिन यमान और अ़म्मार बिन यासिर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन को यहूद अपने दीन में दाख़िल करने की कोशिश करते और यहूदिय्यत की दा'वत देते थे। इस में बताया गया कि येह उन की हवस ख़ाम (फ़ुज़ूल ख़्वाहिश) है, वोह इन को गुमराह न कर सकेंगे। **132 :** और तुम्हारी किताबों में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त मौजूद है और तुम जानते हो कि वोह नबिय्ये बरह़क़ हैं और उन का दीन सच्चा दीन। **133 :** अपनी किताबों में तह़रीफ़ व तब्दील कर के। **134 :** और उन्हों ने बाहम मश्वरा कर के येह मक्र सोचा

www.dawateislami.net

بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْۤا اٰخِرَهٗ

ईमान वालों पर उतरा[135] सुब्ह को उस पर ईमान लाओ और शाम को मुन्किर हो जाओ

لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَلَا تُؤْمِنُوْۤا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِیْنَكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ

शायद वोह फिर जाएं[136] और यक़ीन न लाओ मगर उस का जो तुम्हारे दीन का पैरव है तुम फ़रमा दो कि

الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ یُّؤْتٰۤى اَحَدٌ مِّثْلَ مَاۤ اُوْتِیْتُمْ اَوْ یُحَآجُّوْكُمْ

अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है[137] (यक़ीन काहे का न लाओ) उस का कि किसी को मिले[138] जैसा तुम्हें मिला या कोई तुम पर हुज्जत ला सके

عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِیَدِ اللّٰهِ ۚ یُؤْتِیْهِ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ

तुम्हारे रब के पास[139] तुम फ़रमा दो कि फ़ज़्ल तो अल्लाह ही के हाथ है जिसे चाहे दे और अल्लाह

وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿۷۳﴾ یَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ

वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है अपनी रह़मत से[140] ख़ास करता है जिसे चाहे[141] और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल

الْعَظِیْمِ ﴿۷۴﴾ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ یُّؤَدِّهٖۤ

वाला है और किताबियों में कोई वोह है कि अगर तू उस के पास एक ढेर अमानत रखे तो वोह तुझे अदा

اِلَیْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِیْنَارٍ لَّا یُؤَدِّهٖۤ اِلَیْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ

कर देगा[142] और उन में कोई वोह है कि अगर एक अश्रफ़ी उस के पास अमानत रखे तो वोह तुझे फेर कर न देगा मगर जब तक तू उस के

عَلَیْهِ قَآىِٕمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَیْسَ عَلَیْنَا فِی الْاُمِّیّٖنَ سَبِیْلٌ ۚ

सर पर खड़ा रहे[143] येह इस लिये कि वोह कहते हैं कि अनपढ़ों[144] के मुआ़मले में हम पर कोई मुआख़ज़ा नहीं

135 : या'नी क़ुरआन शरीफ़। **136 शाने नुज़ूल :** यहूद इस्लाम की मुख़ालफ़त में रात दिन नए नए मक्र किया करते थे। ख़ैबर के उ़लमाए यहूद के बारह शख़्सों ने बाहमी मश्वरे से एक येह मक्र सोचा कि इन की एक जमाअ़त सुब्ह को इस्लाम ले आए और शाम को मुरतद हो जाए और लोगों से कहे कि हम ने अपनी किताबों में जो देखा तो साबित हुवा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم वोह नबिय्ये मौऊ़द नहीं हैं जिन की हमारी किताबों में ख़बर है ताकि इस ह़रकत से मुसल्मानों को दीन में शुबा पैदा हो, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर उन का येह राज़ फ़ाश कर दिया और उन का येह मक्र न चल सका और मुसल्मान पहले से ख़बरदार हो गए। **137 :** और जो इस के सिवा है वोह बात़िल व गुमराही है। **138 :** दीन व हिदायत और किताब व ह़िक्मत और शरफ़े फ़ज़ीलत। **139 :** रोज़े क़ियामत। **140 :** या'नी नुबुव्वत व रिसालत से। **141 : मस्अला :** इस से साबित होता है कि नुबुव्वत जिस किसी को मिलती है अल्लाह के फ़ज़्ल से मिलती है, इस में इस्तिह़्क़ाक़ का दख़्ल नहीं। (خازن) **142 शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले किताब के ह़क़ में नाज़िल हुई और इस में ज़ाहिर फ़रमाया गया कि इन में दो क़िस्म के लोग हैं : अमीन व ख़ाइन। बा'ज़ तो ऐसे हैं कि कसीर माल उन के पास अमानत रखा जाए तो बे कमो कास्त वक़्त पर अदा कर दें जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम जिन के पास एक क़ुरैशी ने बारह सो ऊक़िया (तक़रीबन 2 मन 12 किलो) सोना अमानत रखा था आप ने उस को वैसा ही अदा किया और बा'ज़ अहले किताब में इतने बद दियानत हैं कि थोड़े पर भी उन की निय्यत बिगड़ जाती है जैसे कि फ़िन्हास बिन आ़ज़ूरा जिस के पास किसी ने एक अश्रफ़ी अमानत रखी थी, मांगते वक़्त इस से मुकर गया। **143 :** और जब ही देने वाला उस के पास से हटे वोह माले अमानत हज़्म कर जाता है। **144 :** या'नी ग़ैर किताबियों।

www.dawateislami.net

وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ

और अल्लाह पर जान बूझ कर झूट बांधते हैं[145] हां क्यूं नहीं जिस ने अपना अ़हद पूरा किया

وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ

और परहेज़ गारी की और बेशक परहेज़ गार अल्लाह को ख़ुश आते हैं वोह जो अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों के

وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ

बदले ज़लील दाम लेते हैं[146] आख़िरत में उन का कुछ हिस्सा नहीं और अल्लाह न उन से बात

اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ

करे न उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाए क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करे और उन के लिये दर्दनाक

اَلِيْمٌ ﴿٧٧﴾ وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ

अ़ज़ाब है[147] और उन में कुछ वोह हैं जो ज़बान फेर कर किताब में मेल (मिलावट) करते हैं कि तुम समझो

مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا

येह भी किताब में है और वोह किताब में नहीं और कहते हैं येह अल्लाह के पास से है और

هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٨﴾ مَا

वोह अल्लाह के पास से नहीं और अल्लाह पर दीदा व दानिस्ता झूट बांधते हैं[148] किसी

كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ

आदमी का येह ह़क़ नहीं कि अल्लाह उसे किताब और ह़ुक्म व पैग़म्बरी दे[149] फिर वोह लोगों

145 : कि उस ने अपनी किताबों में दूसरे दीन वालों के माल ह़ज़्म कर जाने का ह़ुक्म दिया है, बा वुजूदे कि वोह ख़ूब जानते हैं कि उन की किताबों में कोई ऐसा ह़ुक्म नहीं। 146 **शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के अह़बार और उन के रुअसा अबू राफ़ेअ़ व किनाना बिन अबिल ह़ुक़ैक़ और का'ब बिन अशरफ़ व ह़य्य बिन अख़्तब के ह़क़ में नाज़िल हुई, जिन्हों ने अल्लाह तआ़ला का वोह अ़हद छुपाया था जो सय्यिदे आ़लम ﷺ पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ उन से तौरैत में लिया गया। उन्हों ने उस को बदल दिया और बजाए इस के अपने हाथों से कुछ का कुछ लिख दिया और झूटी क़सम खाई कि येह अल्लाह की त़रफ़ से है और येह सब कुछ उन्हों ने अपनी जमाअ़त के जाहिलों से रिश्वतें और ज़र हासिल करने के लिये किया। 147 : मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया : तीन लोग ऐसे हैं कि रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला न उन से कलाम फ़रमाए और न उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत करे, न उन्हें गुनाहों से पाक करे और उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब है। इस के बा'द सय्यिदे आ़लम ﷺ ने इस आयत को तीन मरतबा पढ़ा। ह़ज़रते अबू ज़र रावी ने कहा कि वोह लोग टोटे और नुक़्सान में रहे, **या रसूलल्लाह!** वोह कौन लोग हैं? हुज़ूर ने फ़रमाया : इज़ार को टख़्नों से नीचे लटकाने वाला और एह़सान जताने वाला और अपने तिजारती माल को झूटी क़सम से रवाज देने वाला। ह़ज़रते अबू उमामा की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया : जो किसी मुसल्मान का ह़क़ मारने के लिये क़सम खाए, अल्लाह उस पर जन्नत ह़राम करता है और दोज़ख़ लाज़िम करता है। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** अगर्चे थोड़ी ही चीज़ हो। फ़रमाया : अगर्चे बबूल की शाख़ ही क्यूं न हो। 148 **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत यहूदो नसारा के ह़क़ में नाज़िल हुई कि उन्हों ने तौरैत व इन्जील की तह़रीफ़ की और किताबुल्लाह में अपनी त़रफ़ से जो चाहा मिलाया। 149 : और कमाले इ़ल्मो अ़मल अ़त़ा फ़रमाए और गुनाहों से मा'सूम करे।

www.dawateislami.net

لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا

से कहे कि अल्लाह को छोड़ कर मेरे बन्दे हो जाओ[150] हां येह कहेगा कि अल्लाह वाले[151] हो जाओ इस सबब से कि

كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ

तुम किताब सिखाते हो और इस से कि तुम दर्स करते हो[152] और न तुम्हें येह हुक्म देगा[153] कि

تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ

फ़िरिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा ठहरा लो क्या तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा बा'द इस के कि

اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۸۰﴾ ع وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ ع ۱۲

तुम मुसल्मान हो लिये[154] और याद करो जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से उन का अ़हद लिया[155] जो मैं तुम को

كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ

किताब और हिक्मत दूं फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वोह रसूल[156] कि तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाए[157] तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना

وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ؕ قَالُوْٓا

और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना फ़रमाया क्यूं तुम ने इक़रार किया और इस पर मेरा भारी ज़िम्मा लिया सब ने अ़र्ज़ की

اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۸۱﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى

हम ने इक़रार किया फ़रमाया तो एक दूसरे पर गवाह हो जाओ और मैं आप तुम्हारे साथ गवाहों में हूं तो जो कोई

بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۸۲﴾ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ

इस[158] के बा'द फिरे[159] तो वोही लोग फ़ासिक़ हैं[160] तो क्या अल्लाह के दीन के सिवा और दीन चाहते हैं[161] और उसी के हुज़ूर

150 : येह अम्बिया से ना मुम्किन है और इन की तरफ़ ऐसी निस्बत बोहतान है। **शाने नुज़ूल :** नजरान के नसारा ने कहा कि हमें हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हुक्म दिया है कि हम उन्हें रब मानें। इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने उन के इस क़ौल की तक्ज़ीब की और बताया कि अम्बिया की शान से ऐसा कहना मुम्किन ही नहीं। इस आयत के शाने नुज़ूल में दूसरा क़ौल येह है कि अबू राफ़ेअ़ यहूदी और सय्यिद नसरानी ने सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा : या मुहम्मद ! आप चाहते हैं कि हम आप की इबादत करें और आप को रब मानें ? हुज़ूर ने फ़रमाया : अल्लाह की पनाह कि मैं ग़ैरुल्लाह की इबादत का हुक्म करूं, न मुझे अल्लाह ने इस का हुक्म दिया, न मुझे इस लिये भेजा। **151 :** रब्बानी के मा'ना आ़लिम फ़क़ीह और आ़लिमे बा अ़मल और निहायत दीनदार के हैं। **152 :** इस से साबित हुवा कि इ़ल्म व ता'लीम का समरा येह होना चाहिये कि आदमी अल्लाह वाला हो जाए जिसे इ़ल्म से येह फ़ाएदा न हुवा उस का इ़ल्म जाएअ़ और बेकार है। **153 :** अल्लाह तआ़ला या उस का कोई नबी। **154 :** ऐसा किसी तरह नहीं हो सकता। **155 :** हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهٗ) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) और इन के बा'द जिस किसी को नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई उन से सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत अ़हद लिया और उन अम्बिया ने अपनी क़ौमों से अ़हद लिया कि अगर उन की हयात में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मब्ऊ़स हों तो आप पर ईमान लाएं और आप की नुसरत करें। इस से साबित हुवा कि हुज़ूर तमाम अम्बिया में सब से अफ़्ज़ल हैं। **156 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **157 :** इस तरह कि उन के सिफ़ात व अह़वाल उस के मुताबिक़ हों जो कुतुबे अम्बिया में बयान फ़रमाए गए हैं। **158 :** अ़हद **159 :** और आने वाले नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने से ए'राज़ करे **160 :** ख़ारिज अज़ ईमान **161 :** बा'द अ़हद लिये जाने के और दलाइल वाज़ेह़ होने

www.dawateislami.net

اَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّاِلَيْهِ

गरदन रखे हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं[162] ख़ुशी से[163] और मजबूरी से[164] और उसी की तरफ़

يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ

फिरेंगे यूं कहो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतरा इब्राहीम

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى

और इस्माईल और इस्हाक़ और या'क़ूब और उन के बेटों पर और जो कुछ मिला मूसा और ईसा

وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ لَهٗ

और अम्बिया को उन के रब से हम उन में किसी पर ईमान में फ़र्क़ नहीं करते[165] और हम उसी के हुज़ूर

مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ

गरदन झुकाए हैं और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वोह हरगिज़ उस से क़बूल न किया जाएगा

وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا

और वोह आख़िरत में ज़ियांकारों (नुक़्सान उठाने वालों में) से है क्यूंकर अल्लाह ऐसी क़ौम की हिदायत चाहे जो ईमान

بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ

ला कर काफ़िर हो गए[166] और गवाही दे चुके थे कि रसूल[167] सच्चा है और उन्हें खुली निशानियां आ चुकी थीं[168]

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ

और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता उन का बदला येह है कि उन पर

لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ

ला'नत है अल्लाह और फ़िरिश्तों और आदमियों की सब की हमेशा इस में रहें न उन पर से

के बा वुजूद। **162 :** मलाएका और इन्सान व जिन्नात। **163 :** दलाइल में नज़र कर के और इन्साफ़ इख़्तियार कर के और येह इताअ़त उन को फ़ाएदा देती और नफ़्अ़ पहुंचाती है। **164 :** किसी ख़ौफ़ से या अ़ज़ाब के देख लेने से, जैसा कि काफ़िर इन्दल मौत वक़्ते यास (मरते वक़्त ज़िन्दगी से मायूस हो कर) ईमान लाता है, येह ईमान उस को क़ियामत में नफ़्अ़ न देगा। **165 :** जैसा कि यहूदो नसारा ने किया कि बा'ज़ पर ईमान लाए बा'ज़ के मुन्किर हो गए। **166 शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत यहूदो नसारा के हक़ में नाज़िल हुई कि यहूद हुज़ूर की बि'सत से क़ब्ल आप के वसीले से दुआएं करते थे और आप की नुबुव्वत के मुक़िर (मानने और तस्लीम करने वाले) थे, और आप की तशरीफ़ आवरी का इन्तिज़ार करते थे। जब हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो ह़सदन आप का इन्कार करने लगे और काफ़िर हो गए। मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला ऐसी क़ौम को कैसे तौफ़ीक़े ईमान दे कि जो जान पहचान कर और मान कर मुन्किर हो गई। **167 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم **168 :** और वोह रोशन मो'जिज़ात देख चुके थे।

www.dawateislami.net

عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

अ़ज़ाब हलका हो और न उन्हें मोहलत दी जाए मगर जिन्हों ने इस के बा'द तौबा की[169]

وَاَصْلَحُوْا ۫ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ

और आपा (ख़ुद को) संभाला तो ज़रूर अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है बेशक वोह जो ईमान ला कर

اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ

काफ़िर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े[170] उन की तौबा हरगिज़ क़बूल न होगी[171] और वोही हैं

الضَّآلُّوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ

बहके हुए वोह जो काफ़िर हुए और काफ़िर ही मरे उन में किसी से

اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

ज़मीन भर सोना हरगिज़ क़बूल न किया जाएगा अगर्चे अपनी ख़लासी को दे उन के लिये

عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾ ع ٩ ١٧

दर्दनाक अ़ज़ाब है और उन का कोई यार नहीं

169 : और कुफ़्र से बाज़ आए। **शाने नुज़ूल :** हारिस इब्ने सुवैद अन्सारी को कुफ़्फ़ार के साथ जा मिलने के बा'द नदामत हुई तो उन्हों ने अपनी क़ौम के पास पयाम भेजा कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त करें कि क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है ? उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। तब वोह मदीनए मुनव्वरह में ताइब हो कर हाज़िर हुए और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की तौबा क़बूल फ़रमाई।

170 शाने नुज़ूल : येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई, जिन्हों ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाने के बा'द हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और इन्जील के साथ कुफ़्र किया, फिर कुफ़्र में और बढ़े, और सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और क़ुरआन के साथ कुफ़्र किया, और एक क़ौल येह है कि येह आयत यहूदो नसारा के हक़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत से क़ब्ल तो अपनी किताबों में आप की ना'त व सिफ़त देख कर आप पर ईमान रखते थे और आप के ज़ुहूर के बा'द काफ़िर हो गए और फिर कुफ़्र में और शदीद हो गए। **171 :** इस हाल में या वक़्ते मौत या अगर वोह कुफ़्र पर मरे।

www.dawateislami.net

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ

तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो[172] और तुम जो कुछ ख़र्च करो

فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۹۲﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا

अल्लाह को मा'लूम है सब खाने बनी इसराईल को ह़लाल थे मगर वोह जो

حَرَّمَ اِسْرَآءِیْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا

या'क़ूब ने अपने ऊपर ह़राम कर लिया था तौरैत उतरने से पहले तुम फ़रमाओ तौरैत

بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۹۳﴾ فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ

ला कर पढ़ो अगर सच्चे हो[173] तो इस के बा'द जो

الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹۴﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۟ قف

अल्लाह पर झूट बांधे[174] तो वोही ज़ालिम हैं तुम फ़रमाओ अल्लाह सच्चा है

فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۹۵﴾ اِنَّ اَوَّلَ

तो इब्राहीम के दीन पर चलो[175] जो हर बात़िल से जुदा थे और शिर्क वालों में न थे बेशक सब में पहला

172 : "بِرّ" से तक़्वा व त़ाअ़त मुराद है। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि यहां ख़र्च करना आ़म है तमाम सदक़ात का या'नी वाजिबा हों या नाफ़िला सब इस में दाख़िल हैं। ह़सन का क़ौल है कि जो माल मुसल्मानों को मह़बूब हो और उसे रिज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करे वोह इस आयत में दाख़िल है ख़्वाह एक ख़जूर ही हो। (خازن) उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ शकर की बोरियां ख़रीद कर सदक़ा करते थे, उन से कहा गया : इस की क़ीमत ही क्यूं नहीं सदक़ा कर देते ? फ़रमाया : शकर मुझे मह़बूब व मरग़ूब है येह चाहता हूं कि राहे ख़ुदा में प्यारी चीज़ ख़र्च करूं। (مدارک) बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है कि ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी मदीने में बड़े मालदार थे उन्हें अपने अम्वाल में बैरुह़ा (बाग़) बहुत प्यारा था, जब येह आयत नाज़िल हुई तो उन्हों ने बारगाहे रिसालत में खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : मुझे अपने अम्वाल में बैरुह़ा सब से प्यारा है मैं उस को राहे ख़ुदा में सदक़ा करता हूं, हुज़ूर ने इस पर मसर्रत का इज़्हार फ़रमाया और ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा ने ब ईमाए हुज़ूर (आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कहने पर) अपने अक़ारिब और बनी अ़म (चचा की औलाद) में उस को तक़्सीम कर दिया। ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने अबू मूसा अश्अ़री को लिखा कि मेरे लिये एक बांदी ख़रीद कर भेज दो ! जब वोह आई तो आप को बहुत पसन्द आई, आप ने येह आयत पढ़ कर अल्लाह के लिये उस को आज़ाद कर दिया। **173 शाने नुज़ूल :** यहूद ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा कि हुज़ूर अपने आप को मिल्लते इब्राहीमी पर ख़याल करते हैं बा वुजूदे कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ऊंट का गोश्त और दूध नहीं खाते थे, आप खाते हैं ! तो आप मिल्लते इब्राहीमी पर कैसे हुए ? हुज़ूर ने फ़रमाया कि येह चीज़ें ह़ज़रते इब्राहीम पर ह़लाल थीं, यहूद कहने लगे कि येह ह़ज़रते नूह़ पर भी ह़राम थीं, ह़ज़रते इब्राहीम पर भी ह़राम थीं और हम तक ह़राम ही चली आईं, इस पर अल्लाह तबारक व तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और बताया गया कि यहूद का येह दा'वा ग़लत् है बल्कि येह चीज़ें ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल व इस्ह़ाक़ व या'क़ूब पर ह़लाल थीं, ह़ज़रते या'क़ूब ने किसी सबब से इन को अपने ऊपर ह़राम फ़रमाया और येह हुरमत उन की औलाद में बाक़ी रही, यहूद ने इस का इन्कार किया तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तौरैत इस मज़मून पर नात़िक़ है अगर तुम्हें इन्कार है तो तौरैत लाओ इस पर यहूद को अपनी फ़ज़ीह़त व रुस्वाई का ख़ौफ़ हुवा और वोह तौरैत न ला सके, उन का किज़्ब ज़ाहिर हो गया और उन्हें शरमिन्दगी उठानी पड़ी। **फ़ाएदा :** इस से साबित हुवा कि पिछली शरीअ़तों में अह़काम मन्सूख़ होते थे, इस में यहूद का रद है जो नस्ख़ के क़ाइल न थे। **फ़ाएदा :** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم उम्मी थे बा वुजूद इस के यहूद को तौरैत से इल्ज़ाम देना और तौरैत के मज़ामीन से इस्तिद्लाल फ़रमाना आप का मो'जिज़ा और नुबुव्वत की दलील है और इस से आप के वह्बी और ग़ैबी उ़लूम का पता चलता है। **174 :** और कहे कि मिल्लते इब्राहीमी में ऊंटों के गोश्त और दूध अल्लाह तआ़ला ने ह़राम किये थे **175 :** कि वोही इस्लाम और दीने मुह़म्मदी है।

www.dawateislami.net

بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّ هُدًى لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۶﴾ ج

घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुवा वोह है जो मक्के में है बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा[176]

فِیْهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ۚ۬ وَ مَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَ لِلّٰهِ عَلَى

इस में खुली निशानियां हैं[177] इब्राहीम के खड़े होने की जगह[178] और जो इस में आए अमान में हो[179] और अल्लाह के लिये

النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ سَبِیْلًا ؕ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ

लोगों पर इस घर का हज करना है जो इस तक चल सके[180] और जो मुन्किर हो तो अल्लाह

غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۷﴾ قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ۖ

सारे जहान से बे परवाह है[181] तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो अल्लाह की आयतें क्यूं नहीं मानते[182]

وَ اللّٰهُ شَهِیْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۸﴾ قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ

और तुम्हारे काम अल्लाह के सामने हैं तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो क्यूं अल्लाह की राह

عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّ اَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَ مَا اللّٰهُ

से रोकते हो[183] उसे जो ईमान लाए उसे टेढ़ा किया चाहते हो और तुम खुद इस पर गवाह हो[184] और अल्लाह

176 **शाने नुज़ूल :** यहूद ने मुसल्मानों से कहा था कि बैतुल मक़्दिस हमारा क़िब्ला है का'बे से अफ़्ज़ल और इस से पहला है, अम्बिया का मक़ामे हिजरत व क़िब्लए इबादत है, मुसल्मानों ने कहा कि का'बा अफ़्ज़ल है, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस में बताया गया कि सब से पहला मकान जिस को अल्लाह तआला ने ताअ़त व इबादत के लिये मुक़र्रर किया नमाज़ का क़िब्ला हज और तवाफ़ का मौज़अ़ बनाया जिस में नेकियों के सवाब ज़ियादा होते हैं वोह का'बए मुअ़ज़्ज़मा है जो शहर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में वाक़ेअ़ है। हदीस शरीफ़ में है कि का'बए मुअ़ज़्ज़मा बैतुल मक़्दिस से चालीस साल क़ब्ल बनाया गया। **177 :** जो इस की हुरमत व फ़ज़ीलत पर दलालत करती हैं उन निशानियों में से बा'ज़ येह हैं कि परिन्द का'बे शरीफ़ के ऊपर नहीं बैठते और इस के ऊपर से परवाज़ नहीं करते बल्कि परवाज़ करते हुए आते हैं तो इधर उधर हट जाते हैं और जो परिन्द बीमार हो जाते हैं वोह अपना इलाज येही करते हैं कि हवाए का'बा में हो कर गुज़र जाएं इसी से उन्हें शिफ़ा होती है और वुहूश (जंगली जानवर) एक दूसरे को हरम में ईज़ा नहीं देते हत्ता कि कुत्ते इस सर ज़मीन में हिरन पर नहीं दौड़ते और वहां शिकार नहीं करते और लोगों के दिल का'बए मुअ़ज़्ज़मा की तरफ़ खिचते हैं और इस की तरफ़ नज़र करने से आंसू जारी होते हैं और हर शबे जुमुआ़ को अरवाहे औलिया इस के गिर्द हाज़िर होती हैं और जो कोई इस की बे हुरमती का क़स्द करता है बरबाद हो जाता है। उन्हीं आयात (निशानियों) में से मक़ामे इब्राहीम वग़ैरा वोह चीज़ें हैं जिन का आयत में बयान फ़रमाया गया। (مدارک وخازن واحمدی) **178 :** मक़ामे इब्राहीम वोह पथ्थर है जिस पर हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام का'बे शरीफ़ की ता'मीर के वक़्त खड़े होते थे और उस में आप के क़दम मुबारक के निशान थे जो बा वुजूद तवील ज़माना गुज़रने और ब कसरत हाथों से मस होने के अभी तक कुछ बाक़ी हैं। **179 :** यहां तक कि अगर कोई शख़्स क़त्ल व जिनायत कर के हरम में दाख़िल हो तो वहां न उस को क़त्ल किया जाए न उस पर हद क़ाइम की जाए। हज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि अगर मैं अपने वालिद ख़त्ताब के क़ातिल को भी हरम शरीफ़ में पाऊं तो उस को हाथ न लगाऊं यहां तक कि वोह वहां से बाहर आए। **180 मस्अला :** इस आयत में हज की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और इस का कि इस्तिताअ़त शर्त है। हदीस शरीफ़ में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस की तफ़्सीर ज़ाद व राहिला से फ़रमाई। ज़ाद या'नी तोशा खाने पीने का इन्तिज़ाम इस क़दर होना चाहिये कि जा कर वापस आने तक के लिये काफ़ी हो और येह वापसी के वक़्त तक अहलो इ़याल के नफ़्क़े के इलावा होना चाहिये, राह का अम्न भी ज़रूरी है क्यूं कि बिग़ैर इस के इस्तिताअ़त साबित नहीं होती। **181 :** इस से अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी ज़ाहिर होती है और येह मस्अला भी साबित होता है कि फ़र्ज़े क़त्ई का मुन्किर काफ़िर है। **182 :** जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सिद्क़े नुबुव्वत पर दलालत करती हैं। **183 :** नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब कर के और आप की ना'त व सिफ़त छुपा कर जो तौरैत में मज़्कूर है। **184 :** कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की

www.dawateislami.net

بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا

तुम्हारे कौतकों (बुरे कामों) से बे ख़बर नहीं ऐ ईमान वालो अगर तुम कुछ

مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾ وَكَيْفَ

किताबियों के कहे पर चले तो वोह तुम्हारे ईमान के बा'द तुम्हें काफ़िर कर छोड़ेंगे[185] और तुम क्यूंकर

تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ

कुफ़्र करोगे तुम पर तो अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में उस का रसूल तशरीफ़ फ़रमा है और जिस ने

ع ١٠ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

अल्लाह का सहारा लिया तो ज़रूर वोह सीधी राह दिखाया गया ऐ ईमान

اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

वालो अल्लाह से डरो जैसा उस से डरने का हक़ है और हरगिज़ न मरना मगर मुसल्मान

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ

और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो[186] सब मिल कर और आपस में फट न जाना (फ़िर्क़ों में बट न जाना)[187] और अल्लाह का एहसान

عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖۤ

अपने ऊपर याद करो जब तुम में बैर था (दुश्मनी थी) उस ने तुम्हारे दिलों में मिलाप कर दिया तो उस के फ़ज़्ल से तुम आपस में

ना'त तौरैत में मक्तूब है और अल्लाह को जो दीन मक़्बूल है वोह सिर्फ़ दीने इस्लाम ही है। **185 शाने नुज़ूल :** औस व ख़ज़रज के क़बीलों में पहले बड़ी अ़दावत थी और मुद्दतों इन के दरमियान जंग जारी रही, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सदक़े में इन क़बीलों के लोग इस्लाम ला कर बाहम शीरो शकर हुए। एक रोज़ वोह एक मजलिस में बैठे हुए उन्सो महब्बत की बातें कर रहे थे, शास बिन क़ैस यहूदी जो बड़ा दुश्मने इस्लाम था इस त़रफ़ गुज़रा और इन के बाहमी रवाबित़ देख कर जल गया और कहने लगा कि जब येह लोग आपस में मिल गए तो हमारा क्या ठिकाना है, एक जवान को मुक़र्रर किया कि इन की मजलिस में बैठ कर इन की पिछली लड़ाइयों का ज़िक्र छेड़े और उस ज़माने में हर एक क़बीला जो अपनी मद्ह और दूसरों की ह़क़ारत के अश्आ़र लिखता था, पढ़े। चुनान्चे उस यहूदी ने ऐसा ही किया और उस की शर अंगेज़ी से दोनों क़बीलों के लोग त़ैश में आ गए और हथियार उठा लिये क़रीब था कि ख़ूनरेज़ी हो जाए सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم येह ख़बर पा कर मुहाजिरीन के साथ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि ऐ जमाअ़ते अहले इस्लाम येह क्या जाहिलिय्यत की ह़रकात हैं, मैं तुम्हारे दरमियान हूं अल्लाह तआ़ला ने तुम को इस्लाम की इ़ज़्ज़त दी, जाहिलिय्यत की बला से नजात दी, तुम्हारे दरमियान उल्फ़तो महब्बत डाली, तुम फिर ज़मानए कुफ़्र की ह़ालत की त़रफ़ लौटते हो, हुज़ूर के इर्शाद ने उन के दिलों पर असर किया और उन्हों ने समझा कि येह शैत़ान का फ़रेब और दुश्मन का मक्र था, उन्हों ने हाथों से हथियार फेंक दिये और रोते हुए एक दूसरे से लिपट गए और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ फ़रमां बरदाराना चले आए, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **186 : حَبْلِ اللّٰهِ** की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं बा'ज़ कहते हैं इस से क़ुरआन मुराद है। मुस्लिम की ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा कि क़ुरआने पाक "**حَبْلُ اللّٰه**" (अल्लाह की रस्सी) है जिस ने इस का इत्तिबाअ़ किया वोह हिदायत पर है जिस ने इस को छोड़ा वोह गुमराही पर। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि **حَبْلُ اللّٰه** से जमाअ़त मुराद है और फ़रमाया कि तुम जमाअ़त को लाज़िम कर लो कि वोह **حَبْلُ اللّٰه** है जिस को मज़बूत़ थामने का हुक्म दिया गया है। **187 :** जैसे कि यहूदो नसारा मुतफ़र्रिक़ हो गए, इस आयत में उन अफ़्आ़ल व ह़रकात की मुमानअ़त की गई जो मुसल्मानों के दरमियान तफ़र्रुक़ का सबब हों। त़रीक़ए मुस्लिमीन मज़्हबे अहले सुन्नत है इस के सिवा कोई राह इख़्तियार करना दीन में तफ़रीक़ और मम्नूअ़ है।

www.dawateislami.net

اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ

भाई हो गए[188] और तुम एक ग़ारे दोज़ख़ के किनारे पर थे[189] तो उस ने तुम्हें उस से बचा दिया[190] अल्लाह तुम

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ

से यूं ही अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम हिदायत पाओ और तुम में एक गुरौह ऐसा होना चाहिये कि

يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ

भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें[191]

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا

और येही लोग मुराद को पहुंचे[192] और उन जैसे न होना जो आपस में फट गए और उन में फूट पड़ गई[193]

مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۙ﴿۱۰۵﴾ يَّوْمَ

बा'द इस के कि रोशन निशानियां उन्हें आ चुकी थीं[194] और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है जिस दिन

تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۫

कुछ मुंह उन्जाले (चमक्ते) होंगे और कुछ मुंह काले तो वोह जिन के मुंह काले हुए[195]

اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۱۰۶﴾

क्या तुम ईमान ला कर काफ़िर हुए[196] तो अब अ़ज़ाब चखो अपने कुफ़्र का बदला

188 : और इस्लाम की बदौलत अ़दावत दूर हो कर आपस में दीनी महब्बत पैदा हुई, ह़त्ता कि औस और ख़ज़रज की वोह मश्हूर लड़ाई जो एक सो बीस साल से जारी थी और इस के सबब रात दिन क़त्लो ग़ारत की गर्म बाज़ारी रहती थी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़रीए अल्लाह तआ़ला ने मिटा दी और जंग की आग ठन्डी कर दी और जंगजू क़बीलों में उल्फ़तो महब्बत के जज़्बात पैदा कर दिये। **189 :** या'नी ह़ालते कुफ़्र में कि अगर इसी ह़ाल पर मर जाते तो दोज़ख़ में पहुंचते। **190 :** दौलते ईमान अ़त़ा कर के। **191 :** इस आयत से अम्रे मा'रूफ़ व नह्ये मुन्कर की फ़र्ज़िय्यत और इज्माअ़ के ह़ुज्जत होने पर इस्तिद्लाल किया गया है। **192 :** ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा ने फ़रमाया कि नेकियों का हुक्म करना और बदियों से रोकना बेहतरीन जिहाद है। **193 :** जैसा कि यहूदो नसारा आपस में मुख़्तलिफ़ हुए और उन में एक दूसरे के साथ इ़नाद व दुश्मनी रासिख़ हो गई या जैसा कि ख़ुद तुम ज़मानए इस्लाम से पहले जाहिलिय्यत के वक़्त में मुतफ़र्रिक़ थे तुम्हारे दरमियान बुग़्ज़ो इ़नाद था। **मस्अला :** इस आयत में मुसल्मानों को आपस में इत्तिफ़ाक़ व इज्तिमाअ़ का हुक्म दिया गया और इख़्तिलाफ़ और इस के अस्बाब पैदा करने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। अह़ादीस में भी इस की बहुत ताकीदें वारिद हैं और जमाअ़ते मुस्लिमीन से जुदा होने की सख़्ती से मुमानअ़त फ़रमाई गई है जो फ़िर्क़ा पैदा होता है इस हुक्म की मुख़ालफ़त कर के ही पैदा होता है और जमाअ़ते मुस्लिमीन में तफ़रिक़ा अन्दाज़ी के जुर्म का मुरतकिब होता है और ह़स्बे इर्शादे ह़दीस वोह शैत़ान का शिकार है। **194 :** اَعَاذَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى مِنْهُ और ह़क़ वाज़ेह़ हो चुका था। **195 :** या'नी कुफ़्फ़ार। उन से तौबीख़न (झिड़क्ते हुए) कहा जाएगा : **196 :** इस के मुख़ात़ब या तो तमाम कुफ़्फ़ार हैं इस सूरत में ईमान से रोज़े मीसाक़ का ईमान मुराद है जब अल्लाह तआ़ला ने उन से फ़रमाया था क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? सब ने بَلٰى कहा था और ईमान लाए थे अब जो दुन्या में काफ़िर हुए तो उन से फ़रमाया जाता है कि रोज़े मीसाक़ ईमान लाने के बा'द तुम काफ़िर हो गए। ह़सन का क़ौल है कि इस से मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं जिन्हों ने ज़बान से इज़्हारे ईमान किया था और उन के दिल मुन्किर थे। इक्रिमा ने कहा कि वोह अहले किताब हैं जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत से क़ब्ल तो हुज़ूर पर ईमान लाए और हुज़ूर के ज़ुहूर के बा'द आप का इन्कार कर के काफ़िर हो गए, एक क़ौल येह है कि इस के मुख़ात़ब मुरतद्दीन हैं जो इस्लाम ला कर फिर गए और काफ़िर हो गए।

www.dawateislami.net

وَاَمَّا الَّذِیْنَ ابْیَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِیْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِیْهَا

और वोह जिन के मुंह उन्जाले (रोशन) हुए[197] वोह अल्लाह की रह़मत में हैं वोह हमेशा उस में

خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ تِلْكَ اٰیٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَیْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ یُرِیْدُ

रहेंगे येह अल्लाह की आयतें हैं कि हम ठीक ठीक तुम पर पढ़ते हैं और अल्लाह जहान वालों पर

ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۰۸﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ

ज़ुल्म नहीं चाहता[198] और अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और अल्लाह ही की

ع تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۱۰۹﴾ كُنْتُمْ خَیْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ

त़रफ़ सब कामों की रुजूअ़ है तुम बेहतर हो[199] उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुईं

بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ

भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर किताबी ईमान

الْكِتٰبِ لَكَانَ خَیْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۱۰﴾

लाते[200] तो उन का भला था उन में कुछ मुसल्मान हैं[201] और ज़ियादा काफ़िर

لَنْ یَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ یُّقَاتِلُوْكُمْ یُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ

वोह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे मगर येही सताना[202] और अगर तुम से लड़ें तो तुम्हारे सामने से पीठ फेर जाएंगे[203] फिर

لَا یُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ ضُرِبَتْ عَلَیْهِمُ الذِّلَّةُ اَیْنَ مَا ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ

उन की मदद न होगी उन पर जमा दी गई ख़्वारी (ज़िल्लत) जहां हों अमान न पाएं[204] मगर अल्लाह की डोर[205]

---

197 : या'नी अहले ईमान, कि उस रोज़ बि करमिही तआ़ला वोह फ़रह़ानो शादां होंगे और उन के चेहरे चमक्ते दमक्ते होंगे, दाहने बाएं और सामने नूर होगा। **198 :** और किसी को बे जुर्म अ़ज़ाब नहीं देता और किसी की नेकी का सवाब कम नहीं करता। **199 :** ऐ उम्मते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! **शाने नुज़ूल :** यहूदियों में से मालिक बिन सैफ़ और वह्ब बिन यहूदा ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द वग़ैरा अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा : हम तुम से अफ़्ज़ल हैं और हमारा दीन तुम्हारे दीन से बेहतर है जिस की तुम हमें दा'वत देते हो, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। तिरमिज़ी की ह़दीस में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला मेरी उम्मत को गुमराही पर जम्अ़ न करेगा और अल्लाह तआ़ला का दस्ते रह़मत जमाअ़त पर है जो जमाअ़त से जुदा हुवा दोज़ख़ में गया। **200 :** सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर **201 :** जैसे कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्ह़ाब यहूद में से और नज्जाशी और इन के अस्ह़ाब नसारा में से। **202 :** ज़बानी त़ा'नो तश्नीअ़ और धमकी वग़ैरा से। **शाने नुज़ूल :** यहूद में से जो लोग इस्लाम लाए थे जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के हमराही, रुअसाए यहूद उन के दुश्मन हो गए और उन्हें ईज़ा देने की फ़िक्र में रहने लगे, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और अल्लाह तआ़ला ने ईमान लाने वालों को मुत़्मइन कर दिया कि ज़बानी क़ीलो क़ाल के सिवा वोह मुसल्मानों को कोई आज़ार न पहुंचा सकेंगे, ग़लबा मुसल्मानों ही को रहेगा और यहूद का अन्जाम ज़िल्लतो रुस्वाई है। **203 :** और तुम्हारे मुक़ाबले की ताब न ला सकेंगे, येह ग़ैबी ख़बरें ऐसी ही वाक़ेअ़ हुईं। **204 :** हमेशा ज़लील ही रहेंगे इ़ज़्ज़त कभी न पाएंगे इसी का असर है कि आज तक यहूद को कहीं की सल्त़नत मुयस्सर न आई जहां रहे रिआ़या व ग़ुलाम ही बन कर रहे। **205 :** थाम कर या'नी ईमान ला कर।

اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ

और आदमियों की डोर से[206] और ग़ज़बे इलाही के सज़ावार हुए और उन पर जमा दी गई

الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ

मोहताजी[207] येह इस लिये कि वोह अल्लाह की आयतों से कुफ़्र करते और पैग़म्बरों

الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ لَيْسُوْا

को नाहक़ शहीद करते येह इस लिये कि ना फ़रमां बरदार और सरकश थे सब एक

سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ

से नहीं किताबियों में कुछ वोह हैं कि हक़ पर क़ाइम हैं[208] अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं रात की घड़ियों में

وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ

और सज्दा करते हैं[209] अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाते हैं और भलाई

بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ

का हुक्म देते और बुराई से मन्अ करते हैं[210] और नेक कामों पर दौड़ते हैं

وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ

और येह लोग लाइक़ हैं और वोह जो भलाई करें उन का हक़ न मारा जाएगा

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ

और अल्लाह को मा'लूम हैं डर वाले[211] वोह जो काफ़िर हुए उन के माल और औलाद[212]

اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ

उन को अल्लाह से कुछ न बचाएंगे और वोह जहन्नमी हैं उन को

206 : या'नी मुसल्मानों की पनाह ले कर और इन्हें जिज़्या दे कर। **207 :** चुनान्चे यहूदी को मालदार हो कर भी ग़नाए क़ल्बी मुयस्सर नहीं होता। **208 शाने नुज़ूल :** जब हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्हाब ईमान लाए तो अहबारे यहूद ने जल कर कहा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर हम में से जो ईमान लाए हैं वोह बुरे लोग हैं अगर बुरे न होते तो अपने बाप दादा का दीन न छोड़ते, इस पर येह आयत नाज़िल फ़रमाई गई। अ़ता का क़ौल है कि مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ (किताबियों में कुछ वोह हैं कि हक़ पर क़ाइम हैं) से चालीस मर्द अहले नजरान के, बत्तीस हबशा के, आठ रूम के मुराद हैं, जो दीने ईसवी पर थे फिर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए। **209 :** या'नी नमाज़ पढ़ते हैं, इस से या तो नमाज़े इ़शा मुराद है जो अहले किताब नहीं पढ़ते या नमाज़े तहज्जुद। **210 :** और दीन में मुदाहनत (हक़ बात कहने में किसी की परवाह) नहीं करते। **211 :** यहूद ने हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्हाब से कहा था कि तुम दीने इस्लाम क़बूल कर के टोटे (नुक़्सान) में पड़े, तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ख़बर दी कि वोह दरजाते आ़लिया के मुस्तहिक़ हुए और अपनी नेकियों की जज़ा पाएंगे, यहूद की बक्वास बेहूदा है। **212 :** जिन पर उन्हें बहुत नाज़ है।

www.dawateislami.net

فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱۶﴾ مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ

हमेशा उस में रहना[213] कहावत उस की जो इस दुन्या की ज़िन्दगी में[214] ख़र्च करते हैं उस हवा

رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا

की सी है जिस में पाला (सख़्त ठन्डक) हो वोह एक ऐसी क़ौम की खेती पर पड़ी जो अपना ही बुरा करते थे तो उसे बिल्कुल मार गई[215] और

ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا

अल्लाह ने उन पर जुल्म न किया हां वोह ख़ुद अपनी जान पर जुल्म करते हैं ऐ ईमान वालो ग़ैरों को

تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ

अपना राज़दार न बनाओ[216] वोह तुम्हारी बुराई में गई (कमी) नहीं करते उन की आरज़ू है जितनी ईज़ा तुम्हें पहुंचे

بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۖۚ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ قَدْ

बैर (बुग़्ज़) उन की बातों से झलक उठा और वोह[217] जो सीने में छुपाए हैं और बड़ा है

بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ هٰٓاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا

हम ने निशानियां तुम्हें खोल कर सुना दीं अगर तुम्हें अ़क़्ल हो[218] सुनते हो येह जो तुम हो तुम तो उन्हें चाहते हो[219] और

يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۖۚ وَاِذَا

वोह तुम्हें नहीं चाहते[220] और हाल येह कि तुम सब किताबों पर ईमान लाते हो[221] और वोह जब तुम से मिलते हैं कहते हैं हम ईमान लाए[222] और

213 **शाने नुज़ूल :** येह आयत बनी क़ुरैज़ा व बनी नज़ीर के हक़ में नाज़िल हुई, यहूद के रुअसा ने तहसीले रियासत व माल की ग़रज़ से रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ दुश्मनी की थी अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में इर्शाद फ़रमाया कि उन के माल व औलाद कुछ काम न आएंगे, वोह रसूल की दुश्मनी में नाहक़ अपनी आ़क़िबत बरबाद कर रहे हैं। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुश्रिकीने क़ुरैश के हक़ में नाज़िल हुई क्यूं कि अबू जहल को अपनी दौलत व माल पर बड़ा फ़ख़्र था और अबू सुफ़्यान ने बद्र व उहुद में मुश्रिकीन पर बहुत कसीर माल ख़र्च किया था। एक क़ौल येह है कि येह आयत तमाम कुफ़्फ़ार के हक़ में आ़म है इन सब को बताया गया कि माल व औलाद में से कोई भी काम आने वाला और अ़ज़ाबे इलाही से बचाने वाला नहीं। **214 :** मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस से यहूद का वोह ख़र्च मुराद है जो अपने उ़लमा और रुअसा पर करते थे। एक क़ौल येह है कि कुफ़्फ़ार के तमाम नफ़क़ात व सदक़ात मुराद हैं। एक क़ौल येह है कि रियाकार का ख़र्च करना मुराद है क्यूं कि इन सब लोगों का ख़र्च करना या नफ़्ए़ दुन्यवी के लिये होगा या नफ़्ए़ उख़्रवी के लिये, अगर महज़ नफ़्ए़ दुन्यवी के लिये हो तो आख़िरत में इस से क्या फ़ाएदा और रियाकार को तो आख़िरत और रिज़ाए इलाही मक़्सूद ही नहीं होती इस का अ़मल दिखावे और नुमूद के लिये होता है ऐसे अ़मल का आख़िरत में क्या नफ़्अ़ और काफ़िर के तमाम अ़मल अकारत हैं वोह अगर आख़िरत की निय्यत से भी ख़र्च करे तो नफ़्अ़ नहीं पा सकता, इन लोगों के लिये वोह मिसाल बिल्कुल मुताबिक़ है जो आयत में ज़िक्र फ़रमाई जाती है। **215 :** या'नी जिस त़रह़ कि बर्फ़ानी हवा खेती को बरबाद कर देती है इसी त़रह़ कुफ़्र इन्फ़ाक़ को बातिल कर देता है। **216 :** उन से दोस्ती न करो, महब्बत के तअ़ल्लुक़ात न रखो, वोह क़ाबिले ए'तिमाद नहीं हैं। **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुसल्मान यहूद से क़राबत और दोस्ती और पड़ोस वग़ैरा तअ़ल्लुक़ात की बिना पर मेलजोल रखते थे उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** कुफ़्फ़ार से दोस्ती व महब्बत करना और उन्हें अपना राज़दार बनाना ना जाइज़ व मम्नूअ़ है। **217 :** ग़ैज़ो इ़नाद **218 :** तो उन से दोस्ती न करो। **219 :** रिश्तेदारी और दोस्ती वग़ैरा तअ़ल्लुक़ात की बिना पर **220 :** और दीनी मुख़ालफ़त की बिना पर तुम से दुश्मनी रखते हैं। **221 :** और वोह तुम्हारी किताब पर ईमान नहीं रखते। **222 :** येह मुनाफ़िक़ीन का हाल है।

www.dawateislami.net

خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ اِنَّ

अकेले हों तो तुम पर उंग्लियां चबाएं गुस्से से तुम फ़रमा दो कि मर जाओ अपनी घुटन (क़ल्बी जलन) में[223]

اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ز

अल्लाह खूब जानता है दिलों की बात तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगे[224]

وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ

और तुम को बुराई पहुंचे तो इस पर खुश हों और अगर तुम सब्र और परहेज़ गारी किये रहो[225] तो उन का

كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۱۲۰﴾ ع وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ ١٢ ع ٣

दाउं तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा बेशक उन के सब काम खुदा के घेरे में हैं और याद करो ऐ महबूब जब तुम सुब्ह को[226]

اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۱﴾ لا

अपने दौलत ख़ाने से बरआमद हुए मुसल्मानों को लड़ाई के मोरचों पर क़ाइम करते[227] और **अल्लाह** सुनता जानता है

223 : بمیر تا برہی اے حسود کیں رنجیست ۔ کہ از مشقتِ او جز بمرگ نتواں رست (ऐ हासिद ! हसद की बीमारी से नजात हासिल करने के लिये मर जा क्यूं कि मौत के सिवा इस से छुटकारा पाना बहुत मुश्किल है) । **224 :** और इस पर वोह रन्जीदा हों । **225 :** और उन से दोस्ती व महब्बत न करो । **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि दुश्मन के मुक़ाबले में सब्रो तक़्वा काम आता है । **226 :** ब मक़ामे मदीनए तय्यिबा ब क़स्दे उहुद **227 :** जम्हूर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह बयान जंगे उहुद का है जिस का इज्माली वाक़िआ येह है कि जंगे बद्र में शिकस्त खाने से कुफ़्फ़ार को बड़ा रन्ज था इस लिये उन्हों ने ब क़स्दे इन्तिक़ाम लश्करे गिरां मुरत्तब कर के फ़ौज कशी की, जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़बर मिली कि लश्करे कुफ़्फ़ार उहुद में उतरा है तो आप ने अस्हाब से मश्वरा फ़रमाया, इस मश्वरत में अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल को भी बुलाया गया जो इस से क़ब्ल कभी किसी मश्वरत के लिये बुलाया न गया था, अक्सर अन्सार की और इस अब्दुल्लाह की येह राय हुई कि हुज़ूर मदीनए तय्यिबा में ही क़ाइम रहें और जब कुफ़्फ़ार यहां आएं तब उन से मुक़ाबला किया जाए, येही सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की मरज़ी थी, लेकिन बा'ज़ अस्हाब की राय येह हुई कि मदीनए तय्यिबा से बाहर निकल कर लड़ना चाहिये और इसी पर उन्हों ने इसरार किया, सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ ले गए और अस्लहा ज़ैबे तन फ़रमा कर बाहर तशरीफ़ लाए, अब हुज़ूर को देख कर उन अस्हाब को नदामत हुई और उन्हों ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर को राय देना और इस पर इसरार करना हमारी ग़लती थी इस को मुआफ़ फ़रमाइये और जो मरज़िये मुबारक हो वोही कीजिये । हुज़ूर ने फ़रमाया कि नबी के लिये सज़ावार नहीं कि हथियार पहन कर क़ब्ले जंग उतार दे । मुश्रिकीन उहुद में चहार शम्बा (बुध) पन्जशम्बा (जुमा'रात) को पहुंचे थे और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم जुमुआ के रोज़ बा'द नमाज़े जुमुआ एक अन्सारी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर रवाना हुए और पन्दरह शव्वाल 3 सि.हि. रोज़ यकशम्बा (इतवार के दिन) उहुद में पहुंचे, यहां नुज़ूल फ़रमाया और पहाड़ का एक दर्रा जो लश्करे इस्लाम के पीछे था उस तरफ़ से अन्देशा था कि किसी वक़्त दुश्मन पुश्त पर से आ कर हम्ला करे इस लिये हुज़ूर ने अब्दुल्लाह बिन जुबैर को पचास तीर अन्दाज़ों के साथ वहां मामूर फ़रमाया कि अगर दुश्मन इस तरफ़ से हम्ला आवर हो तो तीर बारी कर के उस को दफ़्अ कर दिया जाए और हुक्म दिया कि किसी हाल में यहां से न हटना और इस जगह को न छोड़ना ख़्वाह फ़त्ह हो या शिकस्त हो । अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ जिस ने मदीनए तय्यिबा में रह कर जंग करने की राय दी थी अपनी राय के ख़िलाफ़ किये जाने की वज्ह से बरहम हुवा और कहने लगा कि हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने नौ उम्र लड़कों का कहना तो माना और मेरी बात की परवा न की इस अब्दुल्लाह बिन उबय के साथ तीन सो मुनाफ़िक़ थे उन से इस ने कहा कि जब दुश्मन लश्करे इस्लाम के मुक़ाबिल आ जाए उस वक़्त भाग पड़ो ताकि लश्करे इस्लाम में अब्तरी (इन्तिशार व गड़बड़) हो जाए और तुम्हें देख कर और लोग भी भाग निकलें, मुसल्मानों के लश्कर की कुल ता'दाद मअ इन मुनाफ़िक़ीन के हज़ार थी और मुश्रिकीन तीन हज़ार, मुक़ाबला होते ही अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ अपने तीन सो मुनाफ़िक़ों को ले कर भाग निकला और हुज़ूर के सात सो अस्हाब हुज़ूर के साथ रह गए, **अल्लाह** तआला ने इन को साबित रखा यहां तक कि मुश्रिकीन को हज़ीमत हुई, अब सहाबा भागते हुए मुश्रिकीन के पीछे पड़ गए और हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जहां क़ाइम रहने के लिये फ़रमाया था वहां क़ाइम न रहे तो **अल्लाह** तआला ने इन्हें दिखा दिया कि बद्र में **अल्लाह** और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी की बरकत से फ़त्ह हुई थी यहां हुज़ूर के हुक्म की मुख़ालफ़त का नतीजा येह

www.dawateislami.net

اِذْ هَمَّتْ طَّآىِٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ

जब तुम में के दो गुरौहों का इरादा हुवा कि नामर्दी कर जाएं[228] और अल्लाह उन का संभालने वाला है और मुसल्मानों को

فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ

अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये और बेशक अल्लाह ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे[229]

فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ

तो अल्लाह से डरो कि कहीं तुम शुक्र गुज़ार हो जब ऐ महबूब तुम मुसल्मानों से फ़रमाते थे क्या तुम्हें येह काफ़ी नहीं

اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ بَلٰٓى ۙ اِنْ

कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़िरिश्ते उतार कर हां क्यूं नहीं अगर

تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ

तुम सब्र व तक़्वा करो और काफ़िर उसी दम तुम पर आ पड़ें तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद को

بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى ع

पांच हज़ार फ़िरिश्ते निशान वाले भेजेगा[230] और येह फ़त्ह अल्लाह ने न की मगर तुम्हारी ख़ुशी

لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ؕ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ

के लिये और इसी लिये कि इस से तुम्हारे दिलों को चैन मिले[231] और मदद नहीं मगर अल्लाह ग़ालिब हिक्मत

الْحَكِيْمِ ﴿۱۲۶﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا

वाले के पास से[232] इस लिये कि काफ़िरों का एक हिस्सा काट दे[233] या उन्हें ज़लील करे कि ना मुराद

خَآئِبِيْنَ ﴿۱۲۷﴾ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ

फिर (लौट) जाएं येह बात तुम्हारे हाथ नहीं या उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे या

हुवा कि अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकीन के दिलों से रो'बो हैबत दूर फ़रमाई और वोह पलट पड़े और मुसल्मानों को हज़ीमत हुई। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ एक जमाअ़त रही जिस में ह़ज़रते अबू बक्र व अ़ली व अ़ब्बास व त़ल्ह़ा व सा'द थे, इसी जंग में दन्दाने अक़्दस शहीद हुवा और चेह़रए अक़्दस पर ज़ख़्म आया, इसी के मुतअ़ल्लिक़ येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **228 :** येह दोनों गुरौह अन्सार में से थे, एक बनी सलमा ख़ज़रज में से और एक बनी ह़ारिसा औस में से येह दोनों लश्कर के बाज़ू थे, जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ भागा तो उन्हों ने भी वापस जाने का क़स्द किया अल्लाह तआ़ला ने करम किया और उन्हें इस से महफ़ूज़ रखा और वोह हुज़ूर के साथ साबित रहे यहां इस ने'मतो एह़सान का ज़िक्र फ़रमाया है। **229 :** तुम्हारी ता'दाद भी कम थी तुम्हारे पास ह़थियारों और सुवारों की भी कमी थी। **230 :** चुनान्चे मोमिनीन ने रोज़े बद्र सब्रो तक़्वा से काम लिया अल्लाह तआ़ला ने ह़स्बे वा'दा पांच हज़ार फ़िरिश्तों की मदद भेजी और मुसल्मानों की फ़त्ह और काफ़िरों की शिकस्त हुई। **231 :** और दुश्मन की कसरत और अपनी क़िल्लत से परेशानी और इज़्त़िराब न हो। **232 :** तो चाहिये कि बन्दा मुसब्बिबुल अस्बाब (रब عَزَّوَجَلَّ) पर नज़र रखे और उसी पर तवक्कुल रखे। **233 :** इस त़रह़ कि इन के बड़े बड़े सरदार मक़्तूल हों और गिरिफ़्तार किये जाएं जैसा कि बद्र में पेश आया।

www.dawateislami.net

يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ

उन पर अ़ज़ाब करे कि वोह ज़ालिम हैं और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है

يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۹﴾ ع

जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अ़ज़ाब करे और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰۤوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَّاتَّقُوا

ऐ ईमान वालो सूद दूना दून न खाओ[234] और **अल्लाह** से

اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۳۰﴾ ۚ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْۤ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۳۱﴾ ۚ

डरो इस उम्मीद पर कि तुम्हें फ़लाह़ मिले और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिये तय्यार रखी है[235]

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ ۚ وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ

और **अल्लाह** व रसूल के फ़रमां बरदार रहो[236] इस उम्मीद पर कि तुम रह्म किये जाओ और दौड़ो[237] अपने रब की

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ ۙ

बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मान व ज़मीन आ जाएं[238] परहेज़ गारों के लिये तय्यार रखी है[239]

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ

वोह जो **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं ख़ुशी में और रन्ज में[240] और ग़ुस्सा पीने वाले और लोगों

234 मस्अला : इस आयत में सूद की मुमानअ़त फ़रमाई गई मअ़ तौबीख़ के उस ज़ियादती पर जो उस ज़माने में मा'मूल थी कि जब मीआ़द आ जाती थी और क़र्ज़दार के पास अदा की कोई शक्ल न होती तो क़र्ज़ ख़्वाह माल ज़ियादा कर के मुद्दत बढ़ा देता और ऐसा बार बार करते जैसा कि इस मुल्क के सूद ख़्वार करते हैं और इस को सूद दर सूद कहते **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा गुनाहे कबीरा से आदमी ईमान से ख़ारिज नहीं होता। **235 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : इस में ईमानदारों को तह्दीद (ख़बरदार करना) है कि सूद वग़ैरा जो चीज़ें **अल्लाह** ने ह़राम फ़रमाईं उन को ह़लाल न जानें क्यूं कि ह़रामे क़त़ई को ह़लाल जानना कुफ़्र है। **236 :** कि रसूल صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم की त़ाअ़त त़ाअ़ते इलाही है और रसूल की ना फ़रमानी करने वाला **अल्लाह** का फ़रमां बरदार नहीं हो सकता। **237 :** तौबा व अदाए फ़राइज़ व त़ाआ़त व इख़्लासे अ़मल इख़्तियार कर के **238 :** येह जन्नत की वुस्अ़त का बयान है इस त़रह़ कि लोग समझ सकें क्यूं कि इन्हों ने सब से वसीअ़ चीज़ जो देखी है वोह आस्मान व ज़मीन ही है इस से वोह अन्दाज़ा कर सकते हैं कि अगर आस्मान व ज़मीन के त़बक़े त़बक़े और परत परत बना कर जोड़ दिये जाएं और सब का एक परत कर दिया जाए इस से जन्नत के अ़र्ज़ का अन्दाज़ा होता है कि जन्नत कितनी वसीअ़ है। हरक़ुल बादशाह ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में लिखा कि जब जन्नत की येह वुस्अ़त है कि आस्मान व ज़मीन इस में आ जाएं तो फिर दोज़ख़ कहां है? हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ने जवाब में फ़रमाया : سُبْحٰنَ اللّٰه ! जब दिन आता है तो रात कहां होती है, इस कलामे बलाग़त निज़ाम के मा'ना निहायत दक़ीक़ हैं, ज़ाहिर पहलू येह है कि दौरए फ़लकी से एक जानिब में दिन ह़ासिल होता है तो इस के जानिबे मुक़ाबिल में शब होती है इसी त़रह़ जन्नत जानिबे बाला में है और दोज़ख़ जिहते पस्ती में, यहूद ने येही सुवाल ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से किया था तो आप ने भी येही जवाब दिया था, इस पर उन्हों ने कहा कि तौरैत में भी इसी त़रह़ समझाया गया है, मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** की क़ुदरत व इख़्तियार से कुछ बई़द नहीं जिस शै को जहां चाहे रखे येह इन्सान की तंगिये नज़र है कि किसी चीज़ की वुस्अ़त से ह़ैरान होता है तो पूछने लगता है कि ऐसी बड़ी चीज़ कहां समाएगी। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से दरयाफ़्त किया गया कि जन्नत आस्मान में है या ज़मीन में? फ़रमाया : कौन सी ज़मीन और कौन सा आस्मान है जिस में जन्नत समा सके। अ़र्ज़ किया गया : फिर कहां है? फ़रमाया : आस्मानों के ऊपर ज़ेरे अ़र्श। **239 :** इस आयत और इस से ऊपर की आयत "وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْۤ اُعِدَّتْ لِلْکٰفِرِیْنَ" से साबित हुवा कि जन्नत व दोज़ख़ पैदा हो चुकीं मौजूद हैं। **240 :** या'नी हर ह़ाल में ख़र्च करते

www.dawateislami.net

عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا

से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग अल्लाह के महबूब हैं और वोह कि जब कोई

فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۟ قف

बे हयाई या अपनी जानों पर जुल्म करें[241] अल्लाह को याद कर के अपने गुनाहों की मुआफ़ी चाहें[242]

وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۟ قف وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ

और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह के और अपने किये पर जान बूझ कर अड़ न

يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ

जाएं ऐसों का बदला उन के रब की बख़्शिश और जन्नतें हैं[243] जिन के

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ ؕ قَدْ خَلَتْ

नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें और कामियों (नेक लोगों) का क्या अच्छा नेग (बदला) है[244] तुम से

مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

पहले कुछ तरीक़े बरताव में आ चुके हैं[245] तो ज़मीन में चल कर देखो कैसा अन्जाम हुवा

الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۳۷﴾ هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۸﴾

झुटलाने वालों का[246] येह लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़ गारों को नसीहत है

हैं। बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ख़र्च करो तुम पर ख़र्च किया जाएगा, या'नी ख़ुदा की राह में दो तुम्हें अल्लाह की रह़मत से मिलेगा। **241** : या'नी उन से कोई कबीरा या सग़ीरा गुनाह सरज़द हो। **242** : और तौबा करें और गुनाह से बाज़ आएं और आयिन्दा के लिये उस से बाज़ रहने का अ़ज़्म पुख़्ता करें कि येह तौबए मक़्बूला के शराइत़ में से है। **243 शाने नुज़ूल :** तैहान ख़ुरमा फ़रोश (खजूर बेचने वाले) के पास एक ह़सीन औ़रत ख़ुरमे ख़रीदने आई, इस ने कहा : येह ख़ुरमे तो अच्छे नहीं हैं उ़म्दा ख़ुरमे मकान के अन्दर हैं, इस ह़ीले से उस को मकान में ले गया और पकड़ कर लिपटा लिया और मुंह चूम लिया, औ़रत ने कहा : ख़ुदा से डर ! येह सुनते ही उस को छोड़ दिया और शरमिन्दा हुवा और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ह़ाल अ़र्ज़ किया, इस पर येह आयत "وَالَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا" नाज़िल हुई, एक क़ौल येह है कि एक अन्सारी और एक सक़फ़ी दोनों में मह़ब्बत थी और हर एक ने एक दूसरे को भाई बनाया था, सक़फ़ी जिहाद में गया था और अपने मकान की निगरानी अपने भाई अन्सारी के सिपुर्द कर गया था, एक रोज़ अन्सारी गोश्त लाया जब सक़फ़ी की औ़रत ने गोश्त लेने के लिये हाथ बढ़ाया तो अन्सारी ने उस का हाथ चूम लिया और चूमते ही उस को सख़्त नदामत व शरमिन्दगी हुई और वोह जंगल में निकल गया, अपने सर पर ख़ाक डाली और मुंह पर त़मांचे मारे जब सक़फ़ी जिहाद से वापस आया तो उस ने अपनी बीबी से अन्सारी का ह़ाल दरयाफ़्त किया : उस ने कहा : ख़ुदा ऐसे भाई न बढ़ाए और वाक़िआ़ बयान किया, अन्सारी पहाड़ों में रोता व इस्तिग़फ़ार व तौबा करता फिरता था सक़फ़ी उस को तलाश कर के सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाया उस के ह़क़ में येह आयतें नाज़िल हुईं। **244** : या'नी इत़ाअ़त शिआ़रों के लिये बेहतर जज़ा है। **245** : पिछली उम्मतों के साथ जिन्हों ने हिर्से दुन्या और इस की लज़्ज़ात की त़लब में अम्बिया व मुरसलीन की मुख़ालफ़त की अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मोहलतें दीं फिर भी वोह राहे रास्त पर न आए तो उन्हें हलाको बरबाद कर दिया। **246** : ताकि तुम्हें इ़ब्रत हो।

www.dawateislami.net

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۹﴾ اِنْ

और न सुस्ती करो और न ग़म खाओ[247] तुम्हीं ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो अगर

يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ

तुम्हें[248] कोई तक्लीफ़ पहुंची तो वोह लोग भी वैसी ही तक्लीफ़ पा चुके हैं[249] और येह दिन हैं

نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ

जिन में हम ने लोगों के लिये बारियां रखी हैं[250] और इस लिये कि अल्लाह पहचान करा दे ईमान वालों की[251] और तुम में से कुछ लोगों

شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ۙ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

को शहादत का मर्तबा दे और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को और इस लिये कि अल्लाह मुसल्मानों का निखार कर दे[252]

وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۱﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ

और काफ़िरों को मिटा दे[253] क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी अल्लाह ने

الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۲﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ

तुम्हारे ग़ाज़ियों का इम्तिहान न लिया और न सब्र वालों की आज़्माइश की[254] और तुम तो मौत की तमन्ना किया

الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۪ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۱۴۳﴾ؑ وَمَا ع ۱۴ ۵

करते थे उस के मिलने से पहले[255] तो अब वोह तुम्हें नज़र आई आंखों के सामने और

مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ

मुहम्मद तो एक रसूल हैं[256] इन से पहले और रसूल हो चुके[257] तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या

247 : उस का जो जंगे उहुद में पेश आया। **248 :** जंगे उहुद में **249 :** जंगे बद्र में, बा वुजूद इस के उन्हों ने पस्त हिम्मती न की और तुम से मुक़ाबला करने में सुस्ती से काम न लिया तो तुम्हें भी सुस्ती व कम हिम्मती न चाहिये। **250 :** कभी किसी की बारी है कभी किसी की। **251 :** सब्रो इख़्लास के साथ कि इन को मशक़्क़त व नाकामी जगह से नहीं हटा सकती और इन के पाए सबात में लग़्ज़िश नहीं आ सकती। **252 :** और इन्हें गुनाहों से पाक कर दे। **253 :** या'नी काफ़िरों से जो मुसल्मानों को तक्लीफ़ें पहुंचती हैं वोह तो मुसल्मानों के लिये शहादत व तत़्हीर (गुनाहों से पाकी) हैं और मुसल्मान जो कुफ़्फ़ार को क़त्ल करें तो येह कुफ़्फ़ार की बरबादी और उन का इस्तीसाल (ख़ातिमा करना) है। **254 :** कि अल्लाह की रिज़ा के लिये कैसे ज़ख़्म खाते और तक्लीफ़ उठाते हैं इस में उन पर इताब है जो रोज़े उहुद कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले से भागे। **255 शाने नुज़ूल :** जब शुहदाए बद्र के दरजे और मर्तबे और उन पर अल्लाह तआ़ला के इन्आ़मो एह़सान बयान फ़रमाए गए तो जो मुसल्मान वहां ह़ाज़िर न थे उन्हें ह़सरत हुई और उन्हों ने आरज़ू की, कि काश किसी जिहाद में उन्हें ह़ाज़िरी मुयस्सर आए और शहादत के दरजात मिलें, उन्हीं लोगों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से उहुद पर जाने के लिये इसरार किया था उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **256 :** और रसूलों की बि'सत का मक़्सूद रिसालत की तब्लीग़ और हुज्जत का लाज़िम कर देना है न कि अपनी क़ौम के दरमियान हमेशा मौजूद रहना। **257 :** और उन के मुत्तबिईन उन के बा'द उन के दीन पर बाक़ी रहे। **शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद में जब काफ़िरों ने पुकारा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم शहीद हो गए और शैत़ान ने येह झूटी अफ़्वाह मश्हूर की तो सह़ाबा को बहुत इज़्त़िराब हुवा और उन में से कुछ लोग भाग निकले फिर जब निदा की गई कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तशरीफ़ रखते हैं तो सह़ाबए किराम की एक जमाअ़त

www.dawateislami.net

قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۚ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ

शहीद हों तो तुम उलटे पाउं फिर जाओगे और जो उलटे पाउं फिरेगा अल्लाह का कुछ नुक़्सान न

شَيْـًٔا ۗ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ

करेगा और अ़न्क़रीब अल्लाह शुक्र वालों को सिला देगा[258] और कोई जान बे हुक्मे ख़ुदा मर

اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ۗ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ

नहीं सकती[259] सब का वक़्त लिखा रखा है[260] और जो दुन्या का इन्आ़म चाहे[261] हम उस में से उसे दें

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۗ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ وَ

और जो आख़िरत का इन्आ़म चाहे हम उस में से उसे दें[262] और क़रीब है कि हम शुक्र वालों को सिला अ़ता करें और

كَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ

कितने ही अम्बिया ने जिहाद किया उन के साथ बहुत ख़ुदा वाले थे तो न सुस्त पड़े उन मुसीबतों से जो

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۶﴾

अल्लाह की राह में उन्हें पहुंचीं और न कमज़ोर हुए और न दबे[263] और सब्र वाले अल्लाह को महबूब हैं

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْٓ

वोह कुछ भी न कहते थे सिवा इस दुआ़ के[264] कि ऐ हमारे रब बख़्श दे हमारे गुनाह और जो ज़ियादतियां हम ने अपने

اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۷﴾ فَاٰتٰىهُمُ

काम में कीं[265] और हमारे क़दम जमा दे और हमें इन काफ़िर लोगों पर मदद दे[266] तो अल्लाह ने उन्हें

वापस आई हुज़ूर ने उन्हें हज़ीमत पर मलामत की, उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हमारे मां और बाप आप पर फ़िदा हों आप की शहादत की ख़बर सुन कर हमारे दिल टूट गए और हम से ठहरा न गया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि अम्बिया के बा'द भी उम्मतों पर उन के दीन का इत्तिबाअ़ लाज़िम रहता है तो अगर ऐसा होता भी तो हुज़ूर के दीन का इत्तिबाअ़ और इस की हिमायत लाज़िम रहती। **258 :** जो न फिरे और अपने दीन पर साबित रहे उन को शाकिरीन फ़रमाया क्यूं कि उन्हों ने अपने सबात से ने'मते इस्लाम का शुक्र अदा किया। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते थे कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ अमीनुश्शाकिरीन हैं। **259 :** इस में जिहाद की तरग़ीब है और मुसल्मानों को दुश्मन के मुक़ाबले पर जरी (बहादुर) बनाया जाता है कि कोई शख़्स बिग़ैर हुक्मे इलाही के मर नहीं सकता चाहे वोह महालिक व मआ़रिक (ख़ौफ़नाक जगहों और जंगों) में घुस जाए, और जब मौत का वक़्त आता है तो कोई तदबीर नहीं बचा सकती। **260 :** उस से आगे पीछे नहीं हो सकता। **261 :** और उस को अपने अ़मल व ताअ़त से हुसूले दुन्या मक़्सूद हो। **262 :** इस से साबित हुवा कि मदार निय्यत पर है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में आया है। **263 :** ऐसा ही हर ईमानदार को चाहिये। **264 :** या'नी हिमायते दीन व मक़ामाते हर्ब (जंग के मैदानों) में उन की ज़बान पर कोई ऐसा कलिमा न आता जिस में घबराहट परेशानी और तज़ल्ज़ुल का शाएबा भी होता, बल्कि वोह इस्तिक़्लाल (मज़बूती) के साथ साबित क़दम रहते और दुआ़ करते **265 :** या'नी तमाम सग़ाइर व कबाइर बा वुजूदे कि वोह लोग रब्बानी या'नी अत्क़िया थे फिर भी गुनाहों का अपनी त़रफ़ निस्बत करना शाने तवाज़ोअ़ व इन्किसार और आदाबे अ़ब्दिय्यत में से है। **266 :** इस से येह मस्अला मा'लूम हुवा कि त़लबे ह़ाजत से क़ब्ल तौबा व इस्तिग़्फ़ार आदाबे दुआ़ में से है।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَ حُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ

दुन्या का इन्आ़म दिया[267] और आख़िरत के सवाब की ख़ूबी[268] और नेकी वाले **अल्लाह** को

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴۸﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ع ۱۵

प्यारे हैं ऐ ईमान वालो अगर तुम काफ़िरों के कहे पर चले[269]

يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۱۴۹﴾ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ

तो वोह तुम्हें उलटे पाउं लौटा देंगे[270] फिर टोटा खा के (नुक़्सान उठा के) पलट जाओगे[271] बल्कि **अल्लाह** तुम्हारा मौला है

وَ هُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿۱۵۰﴾ سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ

और वोह सब से बेहतर मददगार कोई दम जाता है कि हम काफ़िरों के दिलों में रो'ब डालेंगे[272]

بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَ بِئْسَ

कि उन्हों ने **अल्लाह** का शरीक ठहराया जिस पर उस ने कोई समझ न उतारी और उन का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरा

مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَ لَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ

ठिकाना ना इन्साफ़ों का और बेशक **अल्लाह** ने तुम्हें सच कर दिखाया अपना वा'दा जब कि तुम उस के हुक्म से काफ़िरों को

بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَ تَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَ عَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

क़त्ल करते थे[273] यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली की और हुक्म में झगड़ा डाला[274] और ना फ़रमानी की[275] बा'द इस के

مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ

कि **अल्लाह** तुम्हें दिखा चुका तुम्हारी ख़ुशी की बात[276] तुम में कोई दुन्या चाहता था[277] और तुम में कोई आख़िरत

267 : या'नी फ़त्हो ज़फ़र और दुश्मनों पर ग़लबा **268 :** मग़्फ़िरत व जन्नत और इस्तिह़्क़ाक़ से ज़ियादा इन्आ़मो इक्राम **269 :** ख़्वाह वोह यहूदो नसारा हों या मुनाफ़िक़ व मुश्रिक **270 :** कुफ़्र व बे दीनी की त़रफ़ **271 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों पर लाज़िम है कि वोह कुफ़्फ़ार से अ़लाह़दगी इख़्तियार करें और हरगिज़ उन की राय व मश्वरे पर अ़मल न करें और उन के कहे पर न चलें। **272 :** जंगे उहुद से वापस हो कर जब अबू सुफ़्यान वग़ैरा अपने लश्करियों के साथ मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ रवाना हुए तो उन्हें इस पर अफ़्सोस हुवा कि हम ने मुसल्मानों को बिल्कुल ख़त्म क्यूं न कर डाला, आपस में मश्वरा कर के इस पर आमादा हुए कि चल कर उन्हें ख़त्म कर दें, जब येह क़स्द पुख़्ता हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दिलों में रो'ब डाला और उन्हें ख़ौफ़े शदीद पैदा हुवा और वोह मक्कए मुकर्रमा ही की त़रफ़ वापस हो गए, अगर्चे सबब तो ख़ास था लेकिन रो'ब तमाम कुफ़्फ़ार के दिलों में डाल दिया गया कि दुन्या के सारे कुफ़्फ़ार मुसल्मानों से डरते हैं और بِفَضْلِهٖ تَعَالٰى दीने इस्लाम तमाम अदयान पर ग़ालिब है। **273 :** जंगे उहुद में **274 :** कुफ़्फ़ार की हज़ीमत के बा'द। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ जो तीर अन्दाज़ थे वोह आपस में कहने लगे कि मुश्रिकीन को हज़ीमत हो चुकी अब यहां ठहर कर क्या करें चलो कुछ माले ग़नीमत ह़ासिल करने की कोशिश करें, बा'ज़ ने कहा : मर्कज़ मत छोड़ो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ब ताकीद हुक्म फ़रमाया है कि तुम अपनी जगह क़ाइम रहना किसी ह़ाल में मर्कज़ न छोड़ना जब तक मेरा हुक्म न आए, मगर लोग ग़नीमत के लिये चल पड़े और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ दस से कम अस्ह़ाब रह गए। **275 :** कि मर्कज़ छोड़ दिया और ग़नीमत ह़ासिल करने में मश्ग़ूल हो गए। **276 :** या'नी कुफ़्फ़ार की हज़ीमत। **277 :** जो मर्कज़ छोड़ कर ग़नीमत के लिये चला गया।

www.dawateislami.net

الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ

चाहता था[278] फिर तुम्हारा मुंह उन से फेर दिया कि तुम्हें आज़माए[279] और बेशक उस ने तुम्हें मुआफ़ कर दिया और अल्लाह

ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵۲﴾ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓى اَحَدٍ وَّ

मुसल्मानों पर फ़ज़्ल करता है जब तुम मुंह उठाए चले जाते थे और पीठ फेर कर किसी को न देखते और

الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى

दूसरी जमाअ़त में हमारे रसूल तुम्हें पुकार रहे थे[280] तो तुम्हें ग़म का बदला ग़म दिया[281] और मुआफ़ी इस लिये सुनाई कि जो हाथ

مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵۳﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ

से गया और जो उफ़्ताद (मुसीबत) पड़ी उस का रन्ज न करो और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है फिर ग़म के बा'द

عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَ

तुम पर चैन की नींद उतारी[282] कि तुम्हारी एक जमाअ़त को घेरे थी[283] और

طَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ

एक गुरौह को[284] अपनी जान की पड़ी थी[285] अल्लाह पर बे जा गुमान करते थे[286] जाहिलिय्यत के

الْجَاهِلِيَّةِ ؕ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ

से गुमान कहते क्या इस काम में कुछ हमारा भी इख़्तियार है तुम फ़रमा दो कि इख़्तियार तो

كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ

सारा अल्लाह का है[287] अपने दिलों में छुपाते हैं[288] जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते कहते हैं

278 : जो अपने अमीर अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ अपनी जगह पर क़ाइम रह कर शहीद हो गया। 279 : और मुसीबतों पर तुम्हारे साबिर व साबित रहने का इम्तिहान हो। 280 : कि ख़ुदा के बन्दो मेरी त़रफ़ आओ। 281 : या'नी तुम ने जो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुक्म की मुख़ालफ़त कर के आप को ग़म पहुंचाया था उस के बदले तुम को हज़ीमत के ग़म में मुब्तला किया। 282 : जो रो'ब व ख़ौफ़ दिलों में था उस को अल्लाह तआ़ला ने दूर किया और अम्नो राहत के साथ उन पर नींद उतारी यहां तक कि मुसल्मानों को गुनूदगी आ गई और नींद ने उन पर ग़लबा किया। ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा फ़रमाते हैं कि रोज़े उ़ह़ुद नींद हम पर छा गई हम मैदान में थे तलवार हमारे हाथ से छूट जाती थी फिर उठाते थे फिर छूट जाती थी। 283 : और वोह जमाअ़त मोमिनीने सादिकुल ईमान की थी। 284 : जो मुनाफ़िक़ थे। 285 : और वोह ख़ौफ़ से परेशान थे। अल्लाह तआ़ला ने वहां मोमिनीन को मुनाफ़िक़ीन से इस त़रह़ मुमताज़ किया था कि मोमिनीन पर तो अम्नो इत्मीनान की नींद का ग़लबा था और मुनाफ़िक़ीन ख़ौफ़ो हिरास में अपने जानों के ख़ौफ़ से परेशान थे और येह आयते अ़ज़ीमा और मो'जिज़ए बाहिरा था। 286 : या'नी मुनाफ़िक़ीन को येह गुमान हो रहा था कि अल्लाह तआ़ला सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की मदद न फ़रमाएगा या येह कि हुज़ूर शहीद हो गए अब आप का दीन बाक़ी न रहेगा। 287 : फ़त्ह़ो ज़फ़र क़ज़ा व क़दर सब उस के हाथ है। 288 : मुनाफ़िक़ीन अपना कुफ़्र और वा'दए इलाही में अपना मुतरद्दिद होना और जिहाद में मुसल्मानों के साथ चले आने पर मुतअस्सिफ़ (अफ़्सुर्दा) होना।

www.dawateislami.net

لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَیْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِیْ بُیُوْتِكُمْ لَبَرَزَ

हमारा कुछ बस होता[289] तो हम यहां न मारे जाते तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने घरों में होते जब भी

الَّذِیْنَ كُتِبَ عَلَیْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَ لِیَبْتَلِیَ اللّٰهُ مَا فِیْ

जिन का मारा जाना लिखा जा चुका था अपनी क़त्ल गाहों तक निकल कर आते[290] और इस लिये कि **अल्लाह** तुम्हारे

صُدُوْرِكُمْ وَ لِیُمَحِّصَ مَا فِیْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ

सीनों की बात आज़्माए और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है[291] उसे खोल दे और **अल्लाह** दिलों की बात

الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ یَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا

जानता है[292] बेशक वोह जो तुम में से फिर गए[293] जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थीं

اسْتَزَلَّهُمُ الشَّیْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَ لَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ اِنَّ

उन्हें शैतान ही ने लग़िज़श दी उन के बा'ज़ आ'माल के बाइस[294] और बेशक **अल्लाह** ने उन्हें मुआफ़ फ़रमा दिया बेशक

اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ ﴿۱۵۵﴾ ع یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ ع ٦/٧

अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म वाला है ऐ ईमान वालो उन काफ़िरों[295] की तरह

كَفَرُوْا وَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِی الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى

न होना जिन्हों ने अपने भाइयों की निस्बत कहा जब वोह सफ़र या जिहाद को गए[296]

لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَ مَا قُتِلُوْا ۚ لِیَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِیْ

कि हमारे पास होते तो न मरते न मारे जाते इस लिये कि **अल्लाह** उन के दिलों में इस का

قُلُوْبِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۱۵۶﴾ وَ

अफ़्सोस रखे और **अल्लाह** जिलाता और मारता है[297] और **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है और

289 : और हमें समझ होती तो हम घर से न निकलते, मुसल्मानों के साथ अहले मक्का से लड़ाई के लिये न आते और हमारे सरदार न मारे जाते। पहले मक़ूले का क़ाइल अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ है और इस मक़ूले का क़ाइल मुअ़त्तिब बिन क़ुशैर। **290 :** और घरों में बैठ रहना कुछ काम न आता क्यूं कि क़ज़ा व क़दर के सामने तदबीर व ह़ीला बेकार है। **291 :** इख़्लास या निफ़ाक़ **292 :** उस से कुछ छुपा नहीं और येह आज़्माइश दूसरों को ख़बरदार करने के लिये है। **293 :** और जंगे उहुद में भाग गए और नबिय्ये करीम के साथ तेरह या चौदह अस्ह़ाब के सिवा कोई बाक़ी न रहा। **294 :** कि उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुक्म के बर ख़िलाफ़ मर्कज़ छोड़ा। **295 :** या'नी इब्ने उबय वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन **296 :** और उस सफ़र में मर गए या जिहाद में शहीद हो गए। **297 :** मौत व ह़यात उसी के इख़्तियार में है, वोह चाहे तो मुसाफ़िर व ग़ाज़ी को सलामत लाए और मह़फ़ूज़ घर में बैठे हुए को मौत दे, इन मुनाफ़िक़ीन के पास बैठ रहना क्या किसी को मौत से बचा सकता है, और जिहाद में जाने से कब मौत लाज़िम है और अगर आदमी जिहाद में मारा जाए तो वोह मौत घर की मौत से बदरजहा बेहतर, लिहाज़ा मुनाफ़िक़ीन का येह क़ौल बात़िल और फ़रेब देही है और इन का मक़्सद मुसल्मानों को जिहाद से नफ़रत दिलाना

www.dawateislami.net

لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ

बेशक अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ[298] तो अल्लाह की बख़्शिश और रह़मत[299] उन के

مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ فَبِمَا

सारे धन दौलत से बेहतर है और अगर तुम मरो या मारे जाओ तो अल्लाह ही की त़रफ़ उठना है[300] तो कैसी कुछ

رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا

अल्लाह की मेह़रबानी है कि ऐ महबूब तुम उन के लिये नर्म दिल हुए[301] और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते[302] तो वोह ज़रूर तुम्हारे गिर्द

مِنْ حَوْلِكَ ۪ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ

से परेशान हो जाते तो तुम उन्हें मुआ़फ़ फ़रमाओ और उन की शफ़ाअ़त करो[303] और कामों में उन से मश्वरा लो[304]

فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿۱۵۹﴾ اِنْ

और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो[305] बेशक तवक्कुल वाले अल्लाह को प्यारे हैं अगर

يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ

अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता[306] और अगर वोह तुम्हें छोड़ दे तो ऐसा कौन है जो फिर

مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ

तुम्हारी मदद करे और मुसल्मानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये और किसी नबी पर येह गुमान नहीं हो सकता कि

يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا

वोह कुछ छुपा रखे[307] और जो छुपा रखे वोह क़ियामत के दिन अपनी छुपाई चीज़ ले कर आएगा फिर हर जान को उन की

है, जैसा कि अगली आयत में इर्शाद होता है। **298 :** और बिलफ़र्ज़ वोह सूरत पेश ही आ जाए जिस का तुम्हें अन्देशा दिलाया जाता है **299 :** जो राहे ख़ुदा में मरने पर ह़ासिल होती है। **300 :** यहां मक़ामाते अ़ब्दिय्यत के तीनों मक़ामों का बयान फ़रमाया गया। **पहला मक़ाम** तो येह है कि बन्दा ब ख़ौफ़े दोज़ख़ अल्लाह की इ़बादत करे तो उस को अ़ज़ाबे नार से अम्न दी जाती है इस की त़रफ़ "لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ" में इशारा है। **दूसरी क़िस्म** वोह बन्दे हैं जो जन्नत के शौक़ में अल्लाह की इ़बादत करते हैं इस की त़रफ़ "وَرَحْمَةٌ" में इशारा है क्यूं कि रह़मत भी जन्नत का एक नाम है। **तीसरी क़िस्म** वोह मुख़्लिस बन्दे हैं जो इ़श्क़े इलाही और उस की ज़ाते पाक की मह़ब्बत में उस की इ़बादत करते हैं और उन का मक़्सूद उस की ज़ात के सिवा और कुछ नहीं है, उन्हें ह़क़ سُبْحٰنَهٗ وَتَعَالٰى अपने दाइरए करामत में अपनी तजल्ली से नवाज़ेगा इस की त़रफ़ "لَاِاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ" में इशारा है। **301 :** और आप के मिज़ाज में इस दरजे लुत्फ़ो करम और राफ़्तो रह़मत हुई कि रोज़े उ़हुद ग़ज़ब न फ़रमाया। **302 :** और शिद्दतो ग़िल्ज़त से काम लेते **303 :** ताकि अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ फ़रमाए। **304 :** कि इस में उन की दिलदारी भी है और इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई भी और येह फ़ाएदा भी कि मश्वरा सुन्नत हो जाएगा और आयिन्दा उम्मत इस से नफ़्अ़ उठाती रहेगी। मश्वरे के मा'ना हैं किसी अम्र में राय दरयाफ़्त करना। **मस्अला :** इस से इज्तिहाद का जवाज़ और क़ियास का ह़ुज्जत होना साबित हुवा। (مدارک وخازن) **305 :** तवक्कुल के मा'ना हैं अल्लाह तबारक व तआ़ला पर ए'तिमाद करना और कामों को उस के सिपुर्द कर देना। मक़्सूद येह है कि बन्दे का ए'तिमाद तमाम कामों में अल्लाह पर होना चाहिये। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मश्वरा तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है। **306 :** और मददे इलाही वोही पाता है जो अपनी क़ुव्वतो त़ाक़त पर भरोसा नहीं करता अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत व रह़मत का उम्मीद वार रहता है। **307 :** क्यूं कि येह शाने नुबुव्वत के ख़िलाफ़ है और अम्बिया सब मा'सूम हैं इन से ऐसा मुम्किन नहीं न वह़्य में न ग़ैर वह़्य में और जो कोई

www.dawateislami.net

كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾ اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ

कमाई भरपूर दी जाएगी और उन पर जुल्म न होगा तो क्या जो अल्लाह की मरज़ी पर चला[308] वोह उस जैसा होगा जिस ने

بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ

अल्लाह का ग़ज़ब ओढ़ा (हक़दार बना)[309] और उस का ठिकाना जहन्नम है और क्या बुरी जगह पलटने की वोह अल्लाह के यहां

عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

दरजा दरजा हैं[310] और अल्लाह उन के काम देखता है बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान हुवा[311] मुसल्मानों पर

اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ

कि उन में उन्हीं में से[312] एक रसूल[313] भेजा जो उन पर उस की आयतें पढ़ता है[314] और उन्हें पाक करता[315]

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ

और उन्हें किताब व हिक्मत सिखाता है[316] और वोह ज़रूर इस से पहले खुली गुमराही

مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾ اَوَلَمَّاۤ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى ؕ النصف

में थे[317] क्या जब तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे[318] कि इस से दूनी तुम पहुंचा चुके हो[319] तो कहने लगो कि येह कहां

هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾

से आई[320] तुम फ़रमा दो कि वोह तुम्हारी ही तरफ़ से आई[321] बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है

शख़्स कुछ छुपा रखे उस का हुक्म इसी आयत में आगे बयान फ़रमाया जाता है। **308 :** और उस की इताअ़त की, ना फ़रमानी से बचा जैसे कि मुहाजिरीन व अन्सार व सालिहीने उम्मत **309 :** या'नी अल्लाह का ना फ़रमान हुवा जैसे मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार **310 :** हर एक की मन्ज़िलत और उस का मक़ाम जुदा, नेक का अलग, बद का अलग **311 :** मिन्नत ने'मते अ़ज़ीमा को कहते हैं और बेशक सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत ने'मते अ़ज़ीमा है क्यूं कि ख़ल्क़ की पैदाइश जहल व अ़दमे दिरायत व क़िल्लते फ़हम व नुक़्साने अ़क़्ल पर है तो अल्लाह तआ़ला ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को उन में मबऊ़स फ़रमा कर उन्हें गुमराही से रिहाई दी और हुज़ूर की बदौलत उन्हें बीनाई अ़ता फ़रमा कर जहल से निकाला और आप के सदक़े में राहे रास्त की हिदायत फ़रमाई और आप के तुफ़ैल में बे शुमार ने'मतें अ़ता कीं। **312 :** या'नी उन के हाल पर शफ़्क़तो करम फ़रमाने वाला और उन के लिये बाइ़से फ़ख़्रो शरफ़ जिस के अह़वाल, ज़ोह्द, वरअ़, रास्त बाज़ी, दियानत दारी, ख़साइले जमीला, अख़्लाक़े ह़मीदा से वोह वाक़िफ़ हैं। **313 :** सय्यिदे आ़लम ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **314 :** और उस की किताबे मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद उन को सुनाता है बा वुजूदे कि उन के कान पहले कभी कलामे ह़क़ व वह्ये समावी से आशना न हुए थे। **315 :** कुफ़्रो ज़लालत और इरतिकाबे मुह़र्रमात व मआ़सी और ख़साइले ना पसन्दीदा व मलकाते रज़ीला (बुरी आ़दतों) व ज़ुल्माते नफ़्सानिया (गुमराहियों) से **316 :** और नफ़्स की कुव्वते अ़मलिय्या और इल्मिय्या दोनों की तक्मील फ़रमाता है। **317 :** कि ह़क़ व बात़िल व नेक व बद में इम्तियाज़ न रखते थे और जहल व नाबीनाई में मुब्तला थे। **318 :** जैसी कि जंगे उ़ह़ुद में पहुंची कि तुम में से सत्तर क़त्ल हुए। **319 :** बद्र में कि तुम ने सत्तर को क़त्ल किया सत्तर को गिरिफ़्तार किया। **320 :** और क्यूं पहुंची जब कि हम मुसल्मान हैं और हम में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं। **321 :** कि तुम ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की मरज़ी के ख़िलाफ़ मदीनए त़य्यिबा से बाहर निकल कर जंग करने पर इसरार किया फिर वहां पहुंचने के बा'द बा वुजूद हुज़ूर की शदीद मुमानअ़त के ग़नीमत के लिये मर्कज़ छोड़ा येह सबब तुम्हारे क़त्लो हज़ीमत का हुवा।

www.dawateislami.net

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۶۶﴾

और वोह मुसीबत जो तुम पर आई[322] जिस दिन दोनों फ़ौजें[323] मिली थीं वोह अल्लाह के हुक्म से थी और इस लिये कि पहचान करा दे ईमान वालों की

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚۖ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

और इस लिये कि पहचान करा दे उन की जो मुनाफ़िक़ हुए[324] और उन से[325] कहा गया कि आओ[326] अल्लाह की राह में लड़ो

اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ

या दुश्मन को हटाओ[327] बोले अगर हम लड़ाई होती जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते और उस दिन ज़ाहिरी ईमान की ब निस्बत

اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ

खुले कुफ़्र से ज़ियादा क़रीब हैं अपने मुंह से कहते हैं जो उन के दिल में नहीं

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿۱۶۷﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ

और अल्लाह को मा'लूम है जो छुपा रहे हैं[328] वोह जिन्हों ने अपने भाइयों के बारे में[329] कहा और आप बैठ रहे कि

اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ

वोह हमारा कहना मानते[330] तो न मारे जाते तुम फ़रमा दो तो अपनी ही मौत टाल दो अगर

صٰدِقِيْنَ ﴿۱۶۸﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ

सच्चे हो[331] और जो अल्लाह की राह में मारे गए[332] हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि

اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ

वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं[333] शाद हैं उस पर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया[334]

322 : उहुद में 323 : मोमिनीन व मुश्रिकीन की 324 : या'नी मोमिन व मुनाफ़िक़ मुमताज़ हो गए 325 : या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन से 326 : मुसल्मानों की ता'दाद बढ़ाओ और हिफ़ाज़ते दीन के लिये 327 : अपने अहलो माल को बचाने के लिये 328 : या'नी निफ़ाक़। 329 : या'नी शुहदाए उहुद, जो नसबी तौर पर उन के भाई थे उन के हक़ में अ़ब्दुल्लाह बिन उबय वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन ने 330 : और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ जिहाद में न जाते या वहां से फिर आते 331 : मरवी है कि जिस रोज़ मुनाफ़िक़ीन ने येह बात कही उसी दिन सत्तर मुनाफ़िक़ मर गए। 332 **शाने नुज़ूल :** अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत शुहदाए उहुद के हक़ में नाज़िल हुई। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है : सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम्हारे भाई उहुद में शहीद हुए अल्लाह तआ़ला ने उन की अरवाह को सब्ज़ परिन्दों के क़ालिब (जिस्म) अ़ता फ़रमाए वोह जन्नती नहरों पर सैर करते फिरते हैं जन्नती मेवे खाते हैं तिलाई क़नादील जो ज़ेरे अ़र्श मुअ़ल्लक़ हैं उन में रहते हैं जब उन्हों ने खाने पीने रहने के पाकीज़ा ऐ़श पाए तो कहा कि हमारे भाइयों को कौन ख़बर दे कि हम जन्नत में ज़िन्दा हैं ताकि वोह जन्नत से बे रग़बती न करें और जंग से बैठ न रहें अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : मैं उन्हें तुम्हारी ख़बर पहुंचाऊंगा, पस येह आयत नाज़िल फ़रमाई। (ابوداؤد) इस से साबित हुवा कि अरवाह बाक़ी हैं जिस्म के फ़ना के साथ फ़ना नहीं होतीं। 333 : और ज़िन्दों की तरह खाते पीते ऐ़श करते हैं। सियाक़े आयत इस पर दलालत करता है कि हयात रूह व जिस्म दोनों के लिये है। उ़लमा ने फ़रमाया कि शुहदा के जिस्म क़ब्रों में महफ़ूज़ रहते हैं मिट्टी उन को नुक़्सान नहीं पहुंचाती और ज़मानए सहाबा में और इस के बा'द ब कसरत मुआ़यना हुवा है कि अगर कभी शुहदा की क़ब्रें खुल गईं तो उन के जिस्म तरो ताज़ा पाए गए। (خازن وغیرہ) 334 : फ़ज़्लो

www.dawateislami.net

وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ

और ख़ुशियां मना रहे हैं अपने पिछलों की जो अभी उन से न मिले[335] कि उन पर न कुछ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۷۰﴾ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ

अन्देशा है और न कुछ ग़म ख़ुशियां मनाते हैं **अल्लाह** की ने'मत और फ़ज़्ल की

وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۱﴾ ع اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ

और येह कि **अल्लाह** ज़ाएअ़ नहीं करता अज्र मुसल्मानों का[336] वोह जो **अल्लाह** व रसूल के बुलाने पर

وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ

हाज़िर हुए बा'द इस के कि उन्हें ज़ख़्म पहुंच चुका था[337] उन के निकोकारों

وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۲﴾ ج اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ

और परहेज़ गारों के लिये बड़ा सवाब है वोह जिन से लोगों ने कहा[338] कि लोगों ने[339]

جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ

तुम्हारे लिये जथ्था जोड़ा तो उन से डरो तो उन का ईमान और ज़ाइद हुवा और बोले **अल्लाह** हम को बस है और क्या अच्छा

الْوَكِيْلُ ﴿۱۷۳﴾ فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّ

कारसाज़[340] तो पलटे **अल्लाह** के एह़सान और फ़ज़्ल से[341] कि उन्हें कोई बुराई न पहुंची और

करामत और इन्आ़मो एह़सान, मौत के बा'द ह़यात दी, अपना मुक़र्रब किया, जन्नत का रिज़्क़ और उस की ने'मतें अ़ता फ़रमाईं और इन मनाज़िल के ह़ासिल करने के लिये तौफ़ीक़े शहादत दी। **335 :** और दुन्या में वोह ईमान व तक़्वा पर हैं जब शहीद होंगे उन के साथ मिलेंगे और रोज़े क़ियामत अम्न और चैन के साथ उठाए जाएंगे। **336 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : हुज़ूर ने फ़रमाया : जिस किसी के राहे ख़ुदा में ज़ख़्म लगा वोह रोज़े क़ियामत वैसा ही आएगा जैसा ज़ख़्म लगने के वक़्त था उस के ख़ून में ख़ुश्बू मुश्क की होगी और रंग ख़ून का। तिरमिज़ी व नसाई की ह़दीस में है कि शहीद को क़त्ल से तक्लीफ़ नहीं होती मगर ऐसी जैसी किसी को एक ख़राश लगे। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है शहीद के तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं सिवाए क़र्ज़ के। **337 शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद से फ़ारिग़ होने के बा'द जब अबू सुफ़्यान मअ़ अपने हमराहियों के मक़ामे रौह़ा में पहुंचे तो उन्हें अफ़्सोस हुवा कि वोह वापस क्यूं आ गए मुसल्मानों का बिल्कुल ख़ातिमा ही क्यूं न कर दिया येह ख़याल कर के उन्हों ने फिर वापस होने का इरादा किया सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अबू सुफ़्यान के तआ़क़ुब के लिये अपनी रवानगी का ए'लान फ़रमा दिया सह़ाबा की एक जमाअ़त जिन की ता'दाद सत्तर थी और जो जंगे उहुद के ज़ख़्मों से चूर हो रहे थे हुज़ूर के ए'लान पर ह़ाज़िर हो गए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उस जमाअ़त को ले कर अबू सुफ़्यान के तआ़क़ुब में रवाना हो गए जब हुज़ूर मक़ामे ह़मरा अल असद पर पहुंचे जो मदीने से आठ मील है तो वहां मा'लूम हुवा कि मुश्रिकीन मरऊ़ब व ख़ौफ़ज़दा हो कर भाग गए इस वाक़िए़ के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **338 :** या'नी नुऐ़म बिन मस्ऊ़द अश्जई ने। **339 :** या'नी अबू सुफ़्यान वग़ैरा मुश्रिकीन ने **340 शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद से वापस होते हुए अबू सुफ़्यान ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से पुकार कर कह दिया था कि अगले साल हमारी आप की मक़ामे बद्र में जंग होगी हुज़ूर ने उन के जवाब में फ़रमाया : اِنْ شَاءَ اللّٰه, जब वोह वक़्त आया और अबू सुफ़्यान अहले मक्का को ले कर जंग के लिये रवाना हुए तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दिल में ख़ौफ़ डाला और उन्हों ने वापस हो जाने का इरादा किया इस मौक़अ़ पर अबू सुफ़्यान की नुऐ़म बिन मस्ऊ़द अश्जई से मुलाक़ात हुई जो उ़मरह करने आया था अबू सुफ़्यान ने उस से कहा कि ऐ नुऐ़म ! इस ज़माने में मेरी लड़ाई मक़ामे बद्र में मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ तै़ हो चुकी है और इस वक़्त मुझे मुनासिब येह मा'लूम होता है कि मैं जंग

www.dawateislami.net

اتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۷۴﴾ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ

अल्लाह की ख़ुशी पर चले[342] और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है[343] वोह तो शैतान ही है कि

يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۵﴾

अपने दोस्तों से धमकाता है[344] तो उन से न डरो[345] और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो[346]

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ

और ऐ महबूब तुम उन का कुछ ग़म न करो जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं[347] वोह अल्लाह का कुछ न

شَيْـًٔا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

बिगाड़ेंगे अल्लाह चाहता है कि आख़िरत में उन का कोई हिस्सा न रखे[348] और उन के लिये बड़ा

عَظِيْمٌ ﴿۱۷۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ

अज़ाब है वोह जिन्हों ने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया[349] अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۷﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ

और उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है और हरगिज़ काफ़िर इस गुमान में न रहें कि वोह जो हम उन्हें ढील देते हैं

خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

कुछ उन के लिये भला है हम तो इसी लिये उन्हें ढील देते हैं कि और गुनाह में बढ़ें[350] और उन के लिये ज़िल्लत का

में न जाऊं वापस जाऊं तू मदीने जा और तदबीर के साथ मुसल्मानों को मैदाने जंग में जाने से रोक दे इस के इवज़ मैं तुझ को दस ऊंट दूंगा, नुऐम ने मदीने पहुंच कर देखा कि मुसल्मान जंग की तय्यारी कर रहे हैं उन से कहने लगा कि तुम जंग के लिये जाना चाहते हो अहले मक्का ने तुम्हारे लिये बड़े लश्कर जम्अ किये हैं, ख़ुदा की क़सम ! तुम में से एक भी फिर कर न आएगा। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मैं ज़रूर जाऊंगा चाहे मेरे साथ कोई भी न हो। पस हुज़ूर सत्तर सुवारों को हमराह ले कर "حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِيْلُ" पढ़ते हुए रवाना हुए बद्र में पहुंचे वहां आठ शब क़ियाम किया माले तिजारत साथ था उस को फ़रोख़्त किया ख़ूब नफ़्अ़ हुवा और सालिम ग़ानिम मदीनए त़य्यिबा वापस हुए जंग नहीं हुई चूंकि अबू सुफ़्यान और अहले मक्का ख़ौफ़ज़दा हो कर मक्का शरीफ़ को वापस हो गए थे इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **341 :** ब अम्नो आ़फ़िय्यत मनाफ़ेए़ तिजारत ह़ासिल कर के **342 :** और दुश्मन के मुक़ाबले के लिये जुर्अत से निकले और जिहाद का सवाब पाया। **343 :** कि उस ने इत़ाअ़ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आमादगिये जिहाद की तौफ़ीक़ दी और मुश्रिकीन के दिलों को ख़ौफ़ज़दा कर दिया कि वोह मुक़ाबले की हिम्मत न कर सके और राह में से वापस हो गए। **344 :** और मुसल्मानों को मुश्रिकीन की कसरत से डराता है जैसा कि नुऐम बिन मस्ऊ़द अश्जई ने किया। **345 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन व मुश्रिकीन जो शैत़ान के दोस्त हैं उन का ख़ौफ़ न करो। **346 :** क्यूं कि ईमान का मुक़्तज़ा ही येह है कि बन्दे को ख़ुदा ही का ख़ौफ़ हो। **347 :** ख़्वाह वोह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हों या मुनाफ़िक़ीन या रुअसाए यहूद या मुरतद्दीन वोह आप के मुक़ाबले के लिये कितने ही लश्कर जम्अ़ करें काम्याब न होंगे। **348 :** इस में क़दरिय्या व मो'तज़िला का रद है और आयत दलील है इस पर कि ख़ैर व शर ब इरादए इलाही है। **349 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन जो कलिमए ईमान पढ़ने के बा'द काफ़िर हुए या वोह लोग जो बा वुजूद ईमान पर क़ादिर होने के काफ़िर ही रहे और ईमान न लाए। **350 :** ह़क़ से इनाद और रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से ख़िलाफ़ कर के। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया कौन शख़्स अच्छा है ? फ़रमाया : जिस की उ़म्र दराज़ हो और अ़मल अच्छे हों, अ़र्ज़ किया गया और बदतर कौन है ? फ़रमाया : जिस की उ़म्र दराज़ हो और अ़मल ख़राब।

www.dawateislami.net

مُّهِيْنٌ ﴿۱۷۸﴾ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى

अ़ज़ाब है अल्लाह मुसल्मानों को इस ह़ाल पर छोड़ने का नहीं जिस पर तुम हो[351] जब तक

يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ

जुदा न कर दे गन्दे को[352] सुथरे से[353] और अल्लाह की शान येह नहीं कि ऐ आ़म लोगो तुम्हें ग़ैब का इ़ल्म दे दे

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ

हां अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे[354] तो ईमान लाओ अल्लाह और उस के रसूलों पर

وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۹﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ

और अगर ईमान लाओ[355] और परहेज़ गारी करो तो तुम्हारे लिये बड़ा सवाब है और जो बुख़्ल करते हैं[356] उस चीज़ में

يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ

जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है

سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ

अ़न्क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का तौ़क़ होगा[357] और अल्लाह ही वारिस है आस्मानों

351 : ऐ कलिमा गोयाने इस्लाम ! **352 :** या'नी मुनाफ़िक़ को **353 :** मोमिने मुख़्लिस से यहां तक कि अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को तुम्हारे अह़वाल पर मुत्तलअ़ कर के मोमिन व मुनाफ़िक़ हर एक को मुमताज़ फ़रमा दे। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ख़िल्क़त व आफ़रीनिश (पैदाइश) से क़ब्ल जब कि मेरी उम्मत मिट्टी की शक्ल में थी उसी वक़्त वोह मेरे सामने अपनी सूरतों में पेश की गई जैसा कि ह़ज़रते आदम पर पेश की गई और मुझे इ़ल्म दिया गया, कौन मुझ पर ईमान लाएगा कौन कुफ़्र करेगा। येह ख़बर जब मुनाफ़िक़ीन को पहुंची तो उन्हों ने बराहे इस्तिह़ज़ा कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का गुमान है कि वोह येह जानते हैं कि जो लोग अभी पैदा भी नहीं हुए उन में से कौन उन पर ईमान लाएगा, कौन कुफ़्र करेगा बा वुजूदे कि हम उन के साथ हैं वोह हमें नहीं पहचानते। इस पर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मिम्बर पर क़ियाम फ़रमा कर अल्लाह तआ़ला की ह़म्दो सना के बा'द फ़रमाया : उन लोगों का क्या ह़ाल है जो मेरे इ़ल्म में त़ा'न करते हैं ! आज से क़ियामत तक जो कुछ होने वाला है उस में से कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिस का तुम मुझ से सुवाल करो और मैं तुम्हें उस की ख़बर न दे दूं। अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुज़ाफ़ा सहमी ने खड़े हो कर कहा : मेरा बाप कौन है ? **या रसूलल्लाह** ! फ़रमाया : ह़ुज़ाफ़ा, फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हुए उन्हों ने कहा : **या रसूलल्लाह** ! हम अल्लाह की रबूबिय्यत पर राज़ी हुए, इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हुए, क़ुरआन के इमाम होने पर राज़ी हुए, आप के नबी होने पर राज़ी हुए, हम आप से मुआ़फ़ी चाहते हैं। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : क्या तुम बाज़ आओगे क्या तुम बाज़ आओगे फिर मिम्बर से उतर आए। इस पर अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। इस ह़दीस से साबित हुवा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को क़ियामत तक की तमाम चीज़ों का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया गया है और ह़ुज़ूर के इ़ल्मे ग़ैब में त़ा'न करना मुनाफ़िक़ीन का त़रीक़ा है। **354 :** तो उन बरगुज़ीदा रसूलों को ग़ैब का इ़ल्म देता है और सय्यिदे अम्बिया ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم रसूलों में सब से अफ़्ज़ल और आ'ला हैं इस आयत से और इस के सिवा ब कसरत आयात व ह़दीस से साबित है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ग़ुयूब के उ़लूम अ़त़ा फ़रमाए और ग़ुयूब के इ़ल्म आप का मो'जिज़ा हैं। **355 :** और तस्दीक़ करो कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बरगुज़ीदा रसूलों को ग़ैब पर मुत्तलअ़ किया है। **356 :** बुख़्ल के मा'ना में अक्सर उ़लमा इस त़रफ़ गए हैं कि वाजिब का अदा न करना बुख़्ल है इसी लिये बुख़्ल पर शदीद वईदें आई हैं। चुनान्चे इस आयत में भी एक वईद आ रही है। तिरमिज़ी की ह़दीस में है : बुख़्ल और बद ख़ुल्क़ी येह दो ख़स्लतें ईमानदार में जम्अ़ नहीं होतीं, अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यहां बुख़्ल से ज़कात का न देना मुराद है। **357 :** बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि जिस को अल्लाह ने माल दिया और उस ने ज़कात अदा न की रोज़े क़ियामत वोह माल सांप बन कर उस को तौ़क़ की त़रह़ लिपटेगा और येह कह कर डसता जाएगा कि मैं तेरा माल हूं मैं तेरा ख़ज़ाना हूं।

www.dawateislami.net

وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۸۰﴾ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ

और ज़मीन का[358] और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है बेशक अल्लाह ने सुना

الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا

जिन्हों ने कहा कि अल्लाह मोहताज है और हम ग़नी[359] अब हम लिख रखेंगे उन का कहा[360]

وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿۱۸۱﴾

और अम्बिया को उन का नाहक़ शहीद करना[361] और फ़रमाएंगे कि चखो आग का अ़ज़ाब

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۱۸۲﴾

येह बदला है उस का जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا

वोह जो कहते हैं अल्लाह ने हम से क़रार कर लिया है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएं जब तक ऐसी

بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ

क़ुरबानी का हुक्म न लाए जिसे आग खाए[362] तुम फ़रमा दो मुझ से पहले बहुत रसूल तुम्हारे पास खुली निशानियां

وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۸۳﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ

और येह हुक्म ले कर आए जो तुम कहते हो फिर तुम ने उन्हें क्यूं शहीद किया अगर सच्चे हो[363] तो ऐ महबूब अगर वोह तुम्हारी तक्ज़ीब करते हैं

فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ

तो तुम से अगले रसूलों की भी तक्ज़ीब की गई है जो साफ़ निशानियां[364] और सहीफ़े और चमकती किताब[365]

358 : वोही दाइम बाक़ी है और सब मख़्लूक़ फ़ानी, इन सब की मिल्क बातिल होने वाली है तो निहायत नादानी है कि इस माले ना पाएदार पर बुख़्ल किया जाए और राहे खुदा में न दिया जाए। **359 :** यहूद ने येह आयत "مَنْ ذَاالَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا" सुन कर कहा था कि मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का मा'बूद हम से क़र्ज़ मांगता है तो हम ग़नी हुए वोह फ़क़ीर हुवा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **360 :** आ'माल नामों में **361 :** क़त्ले अम्बिया को इस मक़्बूले पर मा'तूफ़ करने से मा'लूम होता है कि येह दोनों जुर्म बहुत अ़ज़ीम तरीन हैं और क़बाहत में बराबर हैं और शाने अम्बिया में गुस्ताख़ी करने वाला शाने इलाही में बे अदब हो जाता है। **362 शाने नुज़ूल :** यहूद की एक जमाअ़त ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि हम से तौरैत में अ़हद लिया गया है कि जो मुद्दइये रिसालत ऐसी क़ुरबानी न लाए जिस को आस्मान से सफ़ेद आग उतर कर खाए उस पर हम हरगिज़ ईमान न लाएं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन के इस किज़्बे महज़ और इफ़्तिराए ख़ालिस का इब्ताल किया गया क्यूं कि इस शर्त का तौरैत में नामो निशान भी नहीं है और ज़ाहिर है कि नबी की तस्दीक़ के लिये मो'जिज़ा काफ़ी है कोई मो'जिज़ा हो, जब नबी ने कोई मो'जिज़ा दिखाया उस के सिद्क़ पर दलील क़ाइम हो गई और उस की तस्दीक़ करना और उस की नुबुव्वत को मानना लाज़िम हो गया अब किसी ख़ास मो'जिज़े का इसरार हुज्जत क़ाइम होने के बा'द नबी की तस्दीक़ का इन्कार है। **363 :** जब तुम ने येह निशानी लाने वाले अम्बिया को क़त्ल किया और उन पर ईमान न लाए तो साबित हो गया कि तुम्हारा येह दा'वा झूटा है। **364 :** या'नी मो'जिज़ाते बाहिरा (रोशन और ला जवाब कर देने वाले मो'जिज़ात) **365 :** तौरैत व इन्जील।

www.dawateislami.net

الْمُنِيْرِ ﴿۱۸۴﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَ اِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ

ले कर आए थे हर जान को मौत चखनी है और तुम्हारे बदले तो क़ियामत ही को पूरे

الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَ اُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَ مَا

मिलेंगे जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾ لَتُبْلَوُنَّ فِیْۤ اَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ ۫ قف

दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है[366] बेशक ज़रूर तुम्हारी आज़्माइश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में[367]

وَ لَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ مِنَ الَّذِيْنَ

और बेशक ज़रूर तुम अगले किताब वालों[368] और मुश्रिकों से

اَشْرَكُوْۤا اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ

बहुत कुछ बुरा सुनोगे और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो[369] तो येह बड़ी हिम्मत का

الْاُمُوْرِ ﴿۱۸۶﴾ وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ

काम है और याद करो जब **अल्लाह** ने अ़हद लिया उन से जिन्हें किताब अ़ता हुई कि तुम ज़रूर इसे

لِلنَّاسِ وَ لَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۫ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَ اشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا

लोगों से बयान कर देना और न छुपाना[370] तो उन्हों ने उसे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उस के बदले ज़लील दाम

قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَاۤ

हासिल किये[371] तो कितनी बुरी ख़रीदारी है[372] हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने

366 : दुन्या की ह़क़ीक़त इस मुबारक जुम्ले ने बे ह़िजाब कर दी, आदमी ज़िन्दगानी पर मफ़्तून (शैदाई व दीवाना) होता है इसी को सरमाया समझता है और इस फ़ुरसत को बेकार ज़ाएअ़ कर देता है, वक़्ते अख़ीर उसे मा'लूम होता है कि इस में बक़ा न थी और इस के साथ दिल लगाना ह़याते बाक़ी और उख़्रवी ज़िन्दगी के लिये सख़्त मज़र्रत रसां (नुक़्सान देह साबित) हुवा। ह़ज़रते सईद बिन जुबैर ने फ़रमाया कि दुन्या त़ालिबे दुन्या के लिये मताए ग़ुरूर और धोके का सरमाया है लेकिन आख़िरत के त़लब गार के लिये दौलते बाक़ी के ह़ुसूल का ज़रीआ़ और नफ़्अ़ देने वाला सरमाया है, येह मज़्मून इस आयत के ऊपर के जुम्लों से मुस्तफ़ाद होता है। **367 :** ह़ुक़ूक़ व फ़राइज़ और नुक़्सान और मसाइब और अमराज़ व ख़त़रात व क़त्ल व रन्जो ग़म वग़ैरा से ताकि मोमिन व ग़ैर मोमिन में इम्तियाज़ हो जाए, मुसलमानों को येह ख़ित़ाब इस लिये फ़रमाया गया कि आने वाले मसाइब व शदाइद पर इन्हें सब्र आसान हो जाए। **368 :** यहूदो नसारा **369 :** मा'सियत से **370 :** **अल्लाह** तआ़ला ने उ़लमाए तौरैत व इन्जील पर वाजिब किया था कि इन दोनों किताबों में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत पर दलालत करने वाले जो दलाइल हैं वोह लोगों को ख़ूब अच्छी त़रह़ मुशर्रह़ (वाज़ेह़ तशरीह़) कर के समझा दें और हरगिज़ न छुपाएं। **371 :** और रिश्वतें ले कर ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के औसाफ़ को छुपाया जो तौरैत व इन्जील में मज़्कूर थे। **372 :** इल्मे दीन का छुपाना मम्नूअ़ है। ह़दीस शरीफ़ में आया कि जिस शख़्स से कुछ दरयाफ़्त किया गया जिस को वोह जानता है और उस ने उस को छुपाया रोज़े क़ियामत उस के आग की लगाम लगाई जाएगी। **मस्अला :** उ़लमा पर वाजिब है कि अपने इ़ल्म से फ़ाएदा पहुंचाएं और ह़क़ ज़ाहिर करें और किसी ग़रज़े फ़ासिद के लिये उस में से कुछ न छुपाएं।

www.dawateislami.net

اَتَوْا وَّ یُحِبُّوْنَ اَنْ یُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ یَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ

किये पर और चाहते हैं कि बे किये उन की ता'रीफ़ हो[373] ऐसों को हरगिज़ अ़ज़ाब से

مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۱۸۸﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

दूर न जानना और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और अल्लाह ही के लिये है आस्मानों

وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۸۹﴾ ع اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ

और ज़मीन की बादशाही[374] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है बेशक आस्मानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾ الَّذِیْنَ

की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं[375] अ़क़्ल मन्दों के लिये[376] जो

یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰی جُنُوْبِهِمْ وَیَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ

अल्लाह की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लेटे[377] और आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا

में ग़ौर करते हैं[378] ऐ रब हमारे तूने येह बेकार न बनाया[379] पाकी है तुझे तो हमें

عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَیْتَهٗ ؕ وَمَا

दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले ऐ रब हमारे बेशक जिसे तू दोज़ख़ में ले जाए उसे ज़रूर तूने रुस्वाई दी और

لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِیًا یُّنَادِیْ لِلْاِیْمَانِ

ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं ऐ रब हमारे हम ने एक मुनादी को सुना[380] कि ईमान के लिये निदा फ़रमाता है

اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖۗ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَیِّاٰتِنَا

कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए ऐ रब हमारे तो हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयां मह्व फ़रमा (मिटा) दे

373 शाने नुज़ूल : येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो लोगों को धोका देने और गुमराह करने पर ख़ुश होते और बा वुजूद नादान होने के येह पसन्द करते कि उन्हें आ़लिम कहा जाए। **मस्अला :** इस आयत में वईद है ख़ुद पसन्दी करने वाले के लिये और उस के लिये जो लोगों से अपनी झूटी ता'रीफ़ चाहे। जो लोग बिग़ैर इ़ल्म अपने आप को आ़लिम कहलवाते हैं या इसी त़रह और कोई ग़लत़ वस्फ़ अपने लिये पसन्द करते हैं उन्हें इस से सबक़ ह़ासिल करना चाहिये। **374 :** इस में उन गुस्ताख़ों का रद है जिन्हों ने कहा था कि अल्लाह फ़क़ीर है। **375 :** सानेअ़, क़दीम, अ़लीम, ह़कीम, क़ादिर के वुजूद पर दलालत करने वाली **376 :** जिन की अ़क़्ल कदूरत से पाक हो और मख़्लूक़ात के अ़जाइबो ग़राइब को ए'तिबार व इस्तिद्लाल की नज़र से देखते हों। **377 :** या'नी तमाम अह़वाल में। मुस्लिम शरीफ़ में मरवी है कि सय्यिदे आ़लम ﷺ तमाम अह़यान (अवक़ात) में अल्लाह का ज़िक्र फ़रमाते थे। बन्दे का कोई ह़ाल यादे इलाही से ख़ाली न होना चाहिये। ह़दीस शरीफ़ में है : जो बिहिश्ती बाग़ों की ख़ोशाचीनी पसन्द करे उसे चाहिये कि ज़िक्रे इलाही की कसरत करे। **378 :** और इस से इन के सानेअ़ की क़ुदरत व ह़िक्मत पर इस्तिद्लाल करते हैं येह कहते हुए कि **379 :** बल्कि अपनी मा'रिफ़त की दलील बनाया। **380 :** इस मुनादी से मुराद

www.dawateislami.net

وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا

और हमारी मौत अच्छों के साथ कर[381] ऐ रब हमारे और हमें दे वोह[382] जिस का तूने हम से वा'दा किया है अपने रसूलों की मा'रिफ़त और हमें

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۱۹۴﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ

क़ियामत के दिन रुस्वा न कर बेशक तू वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता तो उन की दुआ सुन ली उन के रब ने कि

لَاۤ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ

मैं तुम में काम वाले की मेहनत अकारत नहीं करता मर्द हो या औ़रत तुम आपस में एक हो[383]

فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا

तो वोह जिन्हों ने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और लड़े

وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

और मारे गए मैं ज़रूर उन के सब गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर उन्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिन के नीचे

الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿۱۹۵﴾ لَا

नहरें रवां[384] अल्लाह के पास का सवाब और अल्लाह ही के पास अच्छा सवाब है ऐ सुनने

يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ﴿۱۹۶﴾ ؕ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ ثُمَّ

वाले काफ़िरों का शहरों में अहले गहले (इतराते) फिरना हरगिज़ तुझे धोका न दे[385] थोड़ा बरत्ना है फिर

مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۹۷﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ

उन का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या ही बुरा बिछोना लेकिन वोह जो अपने रब से डरते हैं उन के लिये

جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ

जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा उन में रहें अल्लाह की त़रफ़ की मेहमानी

या सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं जिन की शान में "وَدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ" वारिद है या क़ुरआने करीम **381 :** अम्बिया व सालिह़ीन के, कि हम इन के फ़रमां बरदारों में दाख़िल किये जाएं। **382 :** वोह फ़ज़्लो रह़मत **383 :** और जज़ाए आ'माल में औ़रत व मर्द के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं। **शाने नुज़ूल :** उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **!** मैं हिजरत में औ़रतों का कुछ ज़िक्र ही नहीं सुनती या'नी मर्दों के फ़ज़ाइल तो मा'लूम हुए लेकिन येह भी मा'लूम हो कि औ़रतों को भी हिजरत का कुछ सवाब मिलेगा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इन की तस्कीन फ़रमा दी गई कि सवाब अ़मल पर मुरत्तब है औ़रत का हो या मर्द का। **384 :** येह सब अल्लाह का फ़ज़्लो करम है। **385 शाने नुज़ूल :** मुसल्मानों की एक जमाअ़त ने कहा कि कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन अल्लाह के दुश्मन तो ऐशो आराम में हैं और हम तंगी व मशक़्क़त में, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि कुफ़्फ़ार का येह ऐश मताए क़लील है और अन्जाम ख़राब।

www.dawateislami.net

وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿۱۹۸﴾ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ

और जो **अल्लाह** के पास है वोह नेकों के लिये सब से भला[386] और बेशक कुछ किताबी ऐसे हैं कि **अल्लाह** पर

بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ

ईमान लाते हैं और उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और जो उन की त़रफ़ उतरा[387] उन के दिल **अल्लाह** के हुज़ूर झुके हुए[388] **अल्लाह** की

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

आयतों के बदले ज़लील दाम नहीं लेते[389] येह वोह हैं जिन का सवाब उन के रब के पास है और **अल्लाह** जल्द

سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹۹﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا قف

हिसाब करने वाला है ऐ ईमान वालो सब्र करो[390] और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो

وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۲۰۰﴾ ع ۲۰

और **अल्लाह** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि काम्याब हो

اٰیاتها ۱۷۶ | ۴ سُوْرَةُ النِّسَآءِ مَدَنِيَّةٌ ۹۲ | رکوعاتها ۲۴

सूरए निसाअ मदनिय्या है, इस में एक सो छिहत्तर आयतें और चौबीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

386 : बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की दौलत सराए अक़्दस में ह़ाज़िर हुए तो उन्हों ने देखा कि सुल्त़ाने कौनैन एक बोरिये पर आराम फ़रमा हैं, चमड़े का तक्या जिस में नारियल के रेशे भरे हुए हैं ज़ेरे सरे मुबारक है, जिस्मे अक़्दस में बोरिये के नक़्श हो गए हैं, येह ह़ाल देख कर ह़ज़रते फ़ारूक़ रो पड़े, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया तो अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** क़ैसरो किस्रा तो ऐ़शो राह़त में हों और आप रसूले ख़ुदा हो कर इस ह़ालत में, फ़रमाया : क्या तुम्हें पसन्द नहीं कि उन के लिये दुन्या हो और हमारे लिये आख़िरत। **387 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह आयत नज्जाशी बादशाहे ह़बशा के बाब में नाज़िल हुई, उन की वफ़ात के दिन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया : चलो और अपने भाई की नमाज़ पढ़ो जिस ने दूसरे मुल्क में वफ़ात पाई है, हुज़ूर बक़ीअ़ शरीफ़ में तशरीफ़ ले गए और ज़मीने ह़बशा आप के सामने की गई और नज्जाशी बादशाह का जनाज़ा पेशे नज़र हुवा उस पर आप ने चार तक्बीरों के साथ नमाज़ पढ़ी और उस के लिये इस्तिग़्फ़ार फ़रमाया। سبحان اللہ ! क्या नज़र है क्या शान है सर ज़मीने ह़बशा ह़िजाज़ में सामने पेश कर दी जाती है। मुनाफ़िक़ीन ने इस पर त़ा'न किया और कहा देखो ह़बशा के नसरानी पर नमाज़ पढ़ते हैं जिस को आप ने कभी देखा भी नहीं और वोह आप के दीन पर भी न था, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **388 :** इज़्ज़ो इन्किसार और तवाज़ोअ़ व इख़्लास के साथ। **389 :** जैसा कि यहूद के रुअसा लेते हैं। **390 :** अपने दीन पर और इस को किसी शिद्दत व तक्लीफ़ वग़ैरा की वज्ह से न छोड़ो। सब्र के मा'ना में ह़ज़रते जुनैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया कि सब्र नफ़्स को ना गवार अम्र पर रोकना है बिग़ैर जज़्अ़ के। बा'ज़ ह़ुकमा ने कहा सब्र की तीन क़िस्में हैं : (1) तर्के शिकायत (2) क़बूले क़ज़ा (3) सिद्क़े रिज़ा। **1 :** सूरए निसाअ मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुई, इस में एक सो छिहत्तर आयतें हैं और तीन हज़ार पेंतालीस कलिमे और सोलह हज़ार तीस ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net